Suchetna

Bareilly Diocesan Social Service Centre

ANNUAL REPORT

2014-2015

Think Tank of Suchetna

GOVERNING BODY

Most Rev. Ignatius D'Souza
Honorary President

Fr. Pius Menezes
President

Fr. Peter Malithara
Secretary cum Treasurer

Fr. Derick Pinto
Member

Fr. Julian Pinto
Member

Fr. Rudolf Rodrigues
Member

Fr. Marian Pinto
Member

The governing body of Suchetna consists of the Honorary President, President, Secretary cum-treasurer who is also the Director of the society and 05 nominated members. The members of the governing body meet at least twice a year to evaluate, discuss and to plan out the entire working of the society. The governing body is also the part of the general body which meets once a year to discuss, to plan out and to take major decisions if any.

ORGANOGRAM OF SUCHETNA

चेतना

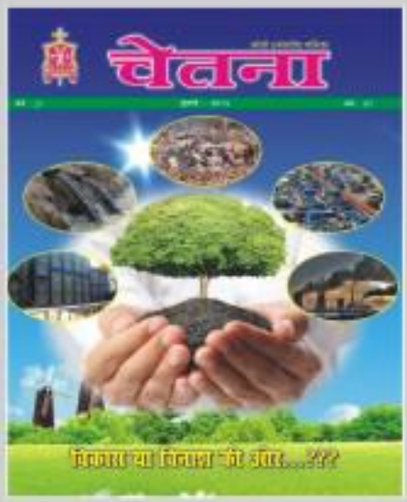

Patron :
Most Rev. Ignatius D'Souza

Editor :
Fr. Gregory Frank

Editorial Board :
Fr. Vivian Fernandes
Fr. Arun Saldanha
Sr. Esme Da Cunha, fdcc
Mrs. Sumita James
Mrs. Nirmala Mannas
Mrs. Anju Kurien
Mr. Philip R. Chatterjee
Mr. George Thomas

Publishing Head Quarters :
Bishop's House
63, Cantt., Bareilly - 243 001
Phone : 0581-2425598
email : chetnabareilly1989@gmail.com
website : www.bareillydiocese.org

Design & Printing :
Srishti
Ultimate Printing Solution
61, Civil Lines,
Near Islamia Girls Inter College
Bareilly - 243 003
Cell : 9411919783

विषय-सूची

क्र.सं.	विवरण	लेखक	पृष्ठ सं.
1.	सम्पादकीय	– फा. ग्रेगरी फ्रैंक	2
2.	Shepherd's Voice	– Bishop Ignatius D'Souza	3
3.	हमारा अमूल्य दुर्बल पर्यावरण	– बिशप इग्नेशियस डिसूजा	4
4.	Bishop's Engagements	– Fr. Arun Saldanha	5
5.	Human Beings are	– Sr. Rekha Punia, UMI	6
6.	The Lord of History	– Sr. Esme de Cunha, fdcc	7
7.	अच्छा परिवार कहाँ से आता है	– फा. फ्रांसिस पिन्टो, बरेली	9
8.	How to Help Save the Environment–		11
9.	स्वच्छ वातावरण – स्वस्थ्य जीवन	– गिरीराज, काशीपुर	15
10.	लक्ष्य बनायें	–	17
11.	प्रभु मुझे शान्ति का साधन बना	– एन्थोनी बी.एल. पीलीभीत	19
12.	बाल चेतना	– चेतना दीदी	20
13.	एक गाँव जहाँ सिर्फ लड़कियाँ करती हैं राज–		21
14.	The Stolen Coat	–	22
15.	समाचार दर्शन	–	23
16.	महा क्विज.....	–	30
17.	बाइबिल प्रश्नोत्तरी – 12	–	31
18.	मेरा विश्वास (धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी) – 13		32

सम्पादकीय

सम्पादक की कलम से

जलस्रोत का रखवाला

उत्तर भारत की पहाड़ी क्षेत्र में एक छोटा नगर बसा था। नगर से ऊँचाइयों की पहाड़ियों की ओर से एक जलस्रोत बहता था जो नगरवासियों के लिये पानी का एकमात्र स्रोत था। नगर समिति ने एक आदमी को इस जलस्रोत का रखवाला नियुक्त किया था। जलस्रोत की राह में पड़ने वाले पत्ते, पत्थर, रेता आदि साफ करना उसका काम था। वह आदमी बड़ी निष्ठा से पहाड़ी रास्तों में चलते हुए प्रतिदिन जलस्रोत को साफ रखता था। जलस्रोत का पानी नगर के निकट आकर एक तालाब बन गया था जिसमें अनेक प्रकार की पक्षियाँ देखने को मिलती थीं। जल्द ही वह नगर पर्यटकों के लिये आकर्षण का केन्द्र बना। आसपास बहुत सारे होटल, पर्यटक अतिथि गृह खुल गये। आसपास के किसान स्रोत के पानी को कृषि कार्य के लिये प्रयोग करने लगे।

वर्ष बीत गये। एक बार नगर समिति की बैठक में वार्षिक बजट पर चर्चा के दौरान कुछ सदस्यों ने एक बूढ़े आदमी को जलस्रोत के रखवाले के रूप में देने वाले भत्ते पर आपत्ति उठाई। उन्होंने कहा कि वे नहीं जानते हैं कि वह कहाँ रहता है, क्या करता है। किसी ने उसे देखा नहीं। व्यर्थ में उस पर क्यों सार्वजनिक धन खर्च करना है। सर्वसम्मति से इस आदमी को नौकरी से निकाल दिया।

कुछ हफ्तों तक न कोई परेशानी हुई, न कोई समस्या आयी। किन्तु जैसे ही शरद्काल आया पतझड़ शुरू हुआ (पेड़ों से पत्ते गिरने का मौसम–जनवरी, फरवरी) छोटी–छोटी डालियाँ स्रोत की राह में बाधा बन गईं। धीरे–धीरे तालाब के पानी का रंग बदलना शुरू हुआ। पानी मैला हुआ और उससे अजीब–सी बदबू आने लगी। पक्षियों ने धीरे–धीरे वहाँ से हटना शुरू किया। पर्यटकों का आना बन्द हुआ।

नगर समिति को अपनी गलती का एहसास हुआ। उन्होंने तुरंत जलस्रोत के रखवाले की पुर्ननियुक्ति की। कुछ हफ्तों के बाद फिर से स्वच्छ साफ सुथरा पानी तालाब में बहना शुरू हुआ।

प्रकृति ईश्वर की देन है, किन्तु इसे स्वच्छ रखना हम सबका दायित्व है। एक समय स्वच्छ, निर्मल धारा प्रवाह वाली गंगा, यमुना नदियाँ इनती दूषित हो चुकी हैं कि इनका पानी नहाने योग्य भी नहीं रहा। सरकार गंगा सफाई के लिये करोड़ों रुपये खर्च कर रही है। अंधाध ुंध जंगलों का कटान, भवन व शहरीकरण, प्लास्टिक का उपयोग, कूड़ा कचरे का निस्तारण न करना पर्यावरण के लिये अभिशाप बनते जा रहे हैं। हमारी धरती अनमोल उपहार है। यदि इसे सुरक्षित स्वच्छ न रखें तो भविष्य में गंभीर परिणाम भुगतने होंगे।

फा. ग्रेगरी फ्रैंक

The Shepherd's Voice

Our Precious & Fragile Ecology

From time immemorial, **the earth has played host to millions of species alongside animals through natural resources, oxygen and other life-supporting agents, and man by every means has benefited from the abundant resources at his disposal.** But over the years, man has become involved with activities that do not only threaten to annihilate the environment that he lives in but also spells doom for him. It is noted that man is the only animal that unduly exploits and deliberately destroys the surrounding on which his life depends. These activities have brought about an alarming situation that threatens the core existence and survival of the globe. So the exploitation of nature continues to be a source of worry for everyone.

In 1979 Pope John Paul II proclaimed **St. Francis of Assisi as the patron of ecology**. The Pope challenged people, not to behave like dissident predators where nature is concerned, but to assume responsibility for it, taking all care so that everything stays healthy and integrated, so as to offer a welcoming and friendly environment even to those who succeed us. By declaring St. Francis of Assisi patron of those who promote ecology, **the Church declares that ecology matters, and recommends a particularly Christian way of being ecological.** Reflecting upon St. Francis' example, Pope John Paul II called for **'ecological conversion'** in peoples' lives so that we can live in greater harmony with the earth in which we live and with the Creator. In this way, living in an ecologically responsible manner is another path toward holiness.

On World Environment Day last June, Holy Father Pope Francis stressed the need to **"cultivate and care"** for the environment, saying it is part of God's plan that man nurtures the world with responsibility, transforming it into a garden, a habitable place for everyone. Mankind, however, is driven by pride of domination, of possessions, manipulation, of exploitation. We do not care for the environment; we do not respect it; we do not consider it as a free gift that we must care for. More and more people are losing the **attitude of wonder, contemplation and listening to creation.** The Pope has warned against greedy exploitation of environmental resources quoting the popular adage: **"God always forgives, we sometimes forgive, but when nature, creation is mistreated, she never forgives."**

I know this all sounds so depressing but we can't get overwhelmed. Every one of us can do something to help slow down and reverse some of the damage. We cannot leave the problem-solving entirely to the experts; we all have a responsibility to our environment. We must learn to live in a way that will sustain our world. **We must learn to use our natural resources which include air, freshwater, forests, wildlife, farmland and seas without damaging them.** As populations expand and lifestyles change, we have to keep the world in a condition so that future generations will have the same natural resources that we have today.

Let's commit ourselves daily to the protection and conservation of our precious & fragile ecology wherever we are so that all may enjoy what God has made. Each day let's begin again, and pray to God our loving Creator to bless and guide our efforts. And as a joyful & caring community, let us pray for one another!

† Ignatius D' Souza
Bishop of Bareilly

धर्माध्यक्ष का संदेश

हमारा अमूल्य और दुर्बल पर्यावरण

अतिप्राचीन काल से यह धरती अपनी प्राकृतिक संसाधनों, ऑक्सीजन और अन्य जीवनदायी कारकों से लाखों जीवियों और प्राणियों के लिये एक मेजबान बनी है। मानव ने अपने लिये उपलब्ध इन प्रचुर संसाधनों का भरपूर लाभ उठाया है। किन्तु इन वर्षों में मनुष्य ऐसी गतिविधियों के लिप्त रहा है जो न केवल पर्यावरण के लिये घातक सिद्ध हो रही हैं बल्कि मनुष्य को और सारी पृथ्वी को विनाश की ओर धकेल रही हैं। गौर करने की बात है कि केवल इन्सान ही ऐसा जीव है जो अनुचित रीति से धरती का शोषण करता है और जानबूझकर वातावरण को नष्ट करता है जिस पर उसका जीवन और अस्तित्व टिका है। इन गतिविधियों ने ऐसी भयप्रद परिस्थिति उत्पन्न की है जिससे भूमंडल का अस्तित्व ही खतरे में है। इस कारण प्रकृति का शोषण हर एक के लिये चिन्ता का विषय बना है।

1979 में संत पापा योहन पौलुस द्वितीय ने असीसी के संत फ्राँसिस को पर्यावरण का संरक्षक संत घोषित किया था। संत पापा ने लोगों से आग्रह किया कि वे प्रकृति के साथ क्रूर लुटेरों के समान व्यवहार न करें। वे प्रकृति के प्रति अपना दायित्व स्वीकार करें, उसकी रक्षा करें ताकि हर कोई स्वस्थ रहे और इस प्रकार आने वाली पीढ़ियों के लिये मैत्रीपूर्ण और स्वागतयोग्य वातावरण बना रहे। संत फ्राँसिस असीसी को पर्यावरण का संरक्षक संत घोषित करने से कलीसिया घोषित करती है कि पर्यावरण महत्वपूर्ण मुद्दा है और पर्यावरण प्रेमी होने की ख्रीस्तीय नीति का परामर्श देती है। संत फ्रांसिस के उदाहरण पर मनन चिन्तन करते हुए संत पापा योहन पौलुस द्वितीय लोगों के जीवन में **'पर्यावरण का मनपरिवर्तन'** के लिये आह्वान करते हैं जिससे हम जिस धरती पर जीते हैं उसके साथ और सृष्टिकर्ता के साथ सौहार्दपूर्ण जीवन जी सकें। इस प्रकार पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी का जीवन पवित्रता की ओर एक और राह है।

गत जून महीने में पर्यावरण दिवस पर संत पापा फ्राँसिस ने **''पर्यावरण की देखभाल और उसे पोषित''** करने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि यह ईश्वर की योजना का अंग है कि मनुष्य धरती का जिम्मेदारी से परिपोषण करें, उसे एक वाटिका में परिवर्तित करें, सबके लिये जीने योग्य स्थान बनायें। किन्तु मानवजाति अपना प्रभुत्व जमाने, स्वामित्व स्थापित करने, शोषण करने और धोखेबाजी की प्रवृत्तियों से ग्रसित है। हम पर्यावरण की चिन्ता नहीं करते हैं; उसका सम्मान नहीं करते हैं; हम उसे एक मुफ्त उपहार नहीं समझते हैं जिसका हमें ध्यान रखना है। अधिक से अधिक लोग प्रकृति की ओर आश्चर्य से देखने, मनन चिन्तन करने और प्रकृति को सुनने जैसे मनोभावों से दूर हो रहे हैं। संत पापा ने धरती की संसाधनों का स्वार्थपूर्ण शोषण के खिलाफ चेतावनी देते हुए कहा – **''ईश्वर हर समय क्षमा करता है, हम कभी–कभी क्षमा करते हैं, परन्तु जब प्रकृति, सृष्टि के साथ दुर्व्यवहार किया जाता है, वह कभी क्षमा नहीं करती है।''**

मैं समझता हूँ कि ये विचार हमें उदास करने वाले हैं, परन्तु हम ऐसे महत्वपूर्ण विषय पर उदासीन या तटस्थ नहीं रह सकते। हम में से प्रत्येक व्यक्ति धरती को नुकसान पहुँचाने वाली गतिविधियों को धीमा कर सकता है, जो नुकसान हुआ है उसका समाधान कर सकता है। हम समस्या– निदान का कार्य केवल विशेषज्ञों पर नहीं छोड़ सकते। पर्यावरण की सुरक्षा का दायित्व हम सबका है। हमें इस प्रकार जीना सीखना चाहिये कि हम हमारे संसार को जीवित रखें, बनाये रखें। हमें हमारे प्राकृतिक संसाधनों को जैसे वायु, स्वच्छ जल, वन, वन्यजीव, कृषि योग्य भूमि और सागरों को बिना नुकसान पहुँचाये प्रयोग करना सीखना है।

जैसे–जैसे आबादी बढ़ती है और जीवन शैली बदलती है, हमें संसार को ऐसी स्थिति में बनाये रखना चाहिये जिससे कि जो संसाधन आज हमारे लिये उपलब्ध हैं वे आने वाली पीढ़ियों को भी उपलब्ध हों।

हमारे अतिमूल्य और दुर्बल, कोमल पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण के लिये हम सब कटिबद्ध हों ताकि ईश्वर द्वारा सृष्टि धरती का हर कोई लाभ उठा सके। हर दिन नई शुरुआत करें और हमारे सृष्टिकर्ता ईश्वर से प्रार्थना करें कि वह हमारे प्रयासों पर आशिष दें, उनका मार्गदर्शन करें। एक प्रसन्न और दूसरों की चिन्ता करने वाला समुदाय होने के नाते एक दूसरे के लिये प्रार्थना करें।

† इग्नेशियस डिसूजा
धर्माध्यक्ष

Bishop's Engagements
July 2015

Date	Day	Time		Programme
1st	Wed	11:30	a.m.	Holy Eucharist: St. Francis Boy's Hostel, Daha Farm
			p.m.	Returns to Bareilly
2nd	Thu			Office
3rd	Fri			Office
4th	Sat		p.m.	Visits Gadarpur Mission
5th	**Sun**	8:30	a.m.	Pastoral Visit: First Holy Communion and Confirmation, Our Lady of Mount Carmel Church, Gadarpur
			p.m.	Visits Poliganj Mission
6th	Mon	8:00	a.m.	Blessing and Inauguration of New Block of St. Patrick Academy, Poliganj
			p.m.	Returns to Bareilly
7th -9th	Tue-Thu			Office
10th	Fri		a.m.	Office
		6:30	p.m.	Holy Eucharist: Immaculate Conception Convent (CCR), Bareilly
11th	Sat		a.m.	Office
		6:30	p.m.	Pastors' Gathering: Christ Methodist Church, Bareilly
12th	**Sun**		a.m.	Leaves for Allahabad
13th - 24th	Mon-Fri			Lectures on Johannine Literature: St. Joseph's Regional Seminary, Allahabad
25th	Sat		p.m.	Returns to Bareilly
26th	**Sun**	8:30	a.m.	Pastoral Visit: First Holy Communion and Confirmation, St. Lawrence of Brindisi Church, Izatnagar
			p.m.	Visits Aonla Mission
27th	Mon		a.m.	Returns to Bareilly
			p.m.	Office
28th	Tue		a.m.	Leaves for Kotdwar, Bijnor
29th-30th	Wed-Thu			Attends Meeting of Agra Regional Council for SCC at Kotdwar, Bijnor
31st	Fri			Returns to Bareilly

Fr. Arun Saldanha
Secretary

Human Beings are Designed to be Good...!

My head was aching, heart was heavy, and the spirit quite low! I thought this pain was due to the unfavorable world around...the world that's selfish, negatively critical, unfair, and unloving! A deep despair was setting in...as I knew I couldn't change this world. When I sat for the evening meditation, I was in for the most unexpected surprise! The Lord said, "My child, it's not the lovelessness, or imperfections of others that's causing you this pain. You are in pain... as you have withdrawn your love from others, focusing on their limitations. And whenever anyone blocks the free flow of this energy of love, they are bound to suffer." That day I learnt a very deep secret of life – it's not what others give us, it's always what we give them that decides our bliss. By becoming hard, insensitive, unloving, and judgemental, we harm ourselves the most, though we do not realize it.And whenever we offer unconditional love to the world, it's we who benefit the first.

The master creator has designed us very wisely. In our bodies, there is a system of 'chemical reward/punishment' that acts instantly. A single negative thought about someone is enough to generate toxin in our body that manifests itself not only in our emotions, but also on our very countenance!

Science reveals that any kind of feelings of happiness, success, friendship, love, etc. are basically born out of these four 'feel-good chemicals' that are Endorphins, Dopamine, Serotonin,and Oxytocin.Dopamine is the feeling we get when we find something we are looking for or accomplish something like winning a game, feel like we are making progress, get appreciation and honour etc. We have raised a generation on Dopamine, using this chemical to motivate children to study well, to do well in life etc. But the problem with Dopamine is that it doesn't last, it's literally a 'hit'. For example, no one walks with a sense of incredible accomplishment for a goal they achieved 3 years ago. It's gone! Various other things that give us a hit of Dopamine are alcohol, nicotine, gambling, sex, favourite food, our cell phones etc. It's why we check constantly on FB to know if people liked what we posted. All these things in moderation are fine. But, out of balance, it's addictive and destructive that results in depressions, suicides, diseases, anti-social behavior, addictions etc. Dopamine is a pleasure and pain chemical. The very things that bring us a sense of pleasure in the beginning become the cause of our agony.

The solution to this imbalance of Dopamine is the 'selfless chemicals' named Serotonin and Oxytocin...It's the feeling of trust, friendship, co-operation, sacrifice, self- giving etc. These chemicals take time to build up but they last. You can talk about your grandfather who died 10 years ago and still feel the deep love and bond! And one of the ways we get Oxytocin is ***generosity, acts of kindness, giving our time and energy with no expectation of anything in return***. The remarkable thing about this chemical is that it removes toxins from the body, heals diseases, removes addictions, and the more, the healthier. A person who performs even a very small act of generosity receives Oxytocin, the person on the receiving end also receives it when lovingly he whispers, 'Thank you', and Oxytocin is also generated in a complete stranger just witnessing this act of human generosity from far, and he too is sure to repeat it. The more Oxytocin we have in our body, the more we actually want to do good.

The human body is trying desperately to get us to care for one another and the reason is simple – by ourselves we are junk, but together, we are remarkable. That's what our Creator is trying to teach us. No doubt, our Master briefed the entire law into one single 'law of Love'! May we harness these energies of Love and usher in the *'era of Satyug'*, where ultimately we truly resemble our Father who is the ocean of love and bliss! Amen!

Sr. Rekha, UMI, Bazpur

The Lord of History – His mighty and mysterious long arm

It is so revealing and intriguing to read through our Salvation History and just marvel at the works of God – so mysterious, inconceivable and at times, so 'illogical' from our human point of view.

God destroys the generation of Noah by sending a flood. Only eight members of the immediate family of Noah survive.

Then God decides to choose a People for Himself. He starts with one man, Abram, and his sterile wife. From them spring Isaac and his sons. The jealousy of Jacob's sons made them want to kill their brother Joseph. But instead Joseph becomes the way through which God leads the whole family of 70 starving members to settle in the land of Egypt.

400 hundred years later, their descendants become a threat to the Pharaoh because they 'were so numerous and strong'. God thus sets the stage for the crossing over to the Promised Land of Canaan.

This journey could have been covered within a month or two. But He kept them wanderers in the desert for 40 years – so that not one of those who actually left Egypt entered that Promised Land. God starts all over again with a new desert-born pilgrim generation. He wipes out other peoples to make place for this 'Chosen People'.

We see other astounding miracles of God in history. The most extensive empire in the time of Jesus was the Roman Empire. And so Jesus is born in that Empire though in a remote and despised town. Christianity would spread paradoxically because of persecution, all through the length and breadth of that Empire. Centuries later, through the conversion of the Roman Emperor Constantine, Christianity became the accepted Religion of the whole Empire.

The colonial bug of the geographic expansion of the European nations, repeated this phenomenon. Wherever they went, Christianity went with them, reaching out to the peoples of the Americas, Africa, Asia and Oceania.

Religious wrangling and even abuses through history, led to splits in the Church – the Eastern and Western churches, the Protestant Reformation, a variety of churches all claiming and hailing the Holy Name of Jesus. Centuries later, we see how God worked even through this seemingly unfortunate turn of history. Each Church has brought out and developed various aspects of Christianity – worship, the sacraments and liturgy, a deepening of the Scriptures, fellowship, mission, lay leadership, a married clergy, female priests...

Because of this proliferation of the churches, Christianity has spread much further than it would probably have done as a single united Church. The population of the Catholic Church worldwide equals that of the other churches, thus doubling the number of Christians in the world.

We have a lot to learn from these Churches and they have a lot to learn from us. Together and mutually we build up the Church of God, which thus spreads out like a fan embracing more than any single church could ever have done alone.

The French Revolution seemed to be all against the Church and the Clergy. Napoleon invaded other countries in Europe and even North Africa. Much of the extensive Church property was confiscated by his governments. Religious congregations were scattered and dissolved. To give one small example: There were about 145 Catholic churches in the small city of Verona in Italy before Napoleon took

hold of it in 1805. He suppressed and confiscated most of them, leaving only about 45 churches for the use of the people. The nuns of the suppressed (all cloistered) monasteries were sent away with a small living allowance. Napoleon lasted for 10 years more. When the Austrians conquered Northern Italy, hardly any of those nuns returned to claim their property. Some of them had joined the many new apostolic congregations that sprang up in answer to the plight of the war-torn people and the masses of the poor and ignorant. It was a good cleansing of dead wood, giving rise to a new form of Religious Life at the service of the people. Some 6 or 7 new Congregations started just in that one city, Verona, among which was our Institute founded by St. Magdalene of Canossa

After the Communist Revolution in Russia in 1917, it looked as if the final battle would be between Christianity and Communism. At Fatima, Our Lady predicted the 'conversion of Russia'. The USSR crumbled without a bloody battle in the 1980s, and the Wall of Berlin was broken down by the people themselves. One man sufficed – Mikhail Gorbachev!

Communist China is yet another hurdle. Who will God provide for the liberation of those people? Then there are the peoples of the religions of Asia too. And what about our de-christianised West! God has a lot to do – but with Him a thousand years are like one day. We can only offer Him our little cooperation – which He treasures all the same.

The new threat seems to be between a fundamentalist Islam and the Church. What will Mary, the Woman of the Koran, do to unite her two peoples? We can only hope and pray, and wonder at the long arm of the Lord of History!

Today our forms of Religious Life are also becoming irrelevant or redundant. They do not reach the poor our Congregations were born to serve. This does not even give us a happy cushy life, but rather a disgruntled, never-satisfied form of existence that stifles and inhibits the reason why in the first place "we left all to follow Him". How then can our following of Him ever be blest by God? Will the Spirit of newness have to wash us away too as He did in the time of Noah, of Sodom and Gomorrah, of Napoleon, to bring forth new shoots beyond our imagination!

When the Church has become top-heavy and alienated from the people, what is God showing us to build a more people-centered, poor Church. He has already sent us a Pope. Are we willing to see, to heed His call? Are we willing to pay the price, let go of our comfort zones and let the Spirit blow where He wills???

Our earth is languishing because nature is being exploited and the greed of humankind seems to have no limits. What are the catastrophes God will have to invent to straighten things out and bring us to understand that we as intelligent beings have the responsibility to be custodians of nature, not its destroyers?

Where will technology finally lead us? Will the virtual world overpower and overshadow the real? In the name of an enhanced and immediate technological communication, will direct, face-to-face human communication become a thing of the past? And with almost no human contact will we segregate and imprison ourselves in a world that consists only of us and our technological gadgets?

Will wars become obsolete, since chemical and nuclear weapons, long-distance missiles and the like can wipe away a nation without the enemy even seeing what he is destroying? Will humans finally destroy the Eden they were created for?

We live our little span of life, a part of God's infinite sweep of history. Can He count on us and our cooperation in making our world more livable for all? Small and insignificant we may be, but we are still made to His image and likeness, called to live as children of this mighty God and Father of us all. Holy be His Name!

Sr Esme da Cunha fdcc

पारिवारिक चेतना

अच्छा परिवार कहाँ से आता है ?

हम अकसर सुनते हैं कि हमें एक अच्छा नेता चाहिए, एक ईमानदार अधिकारी चाहिए एक कर्मठ अध्यापक चाहिए, एक पवित्र पुरोहित चाहिए..... आदि। बच्चे कहते हैं कि हमारी मैम बहुत अच्छी हो मोम और डैड आदर्श हो, बड़े बढ़े पवित्र हो.....। माता–पिता सोचते हैं कि बच्चे बहुत ही आज्ञाकारी हो मेहनती हो और बिलकुल अच्छे हों। शादी के समय हर लड़का चाहता है कि उसे बहुत अच्छी सुशील लड़की मिले और हर लड़की चाहती है कि उसे सर्वगुण सम्पन्न लड़का मिले इत्यादि। इस प्रकार हम में से हर कोई व्यक्ति चाहता है कि जब कुछ अच्छा ही मिले। अच्छी बात है। यही होना भी चाहिए। परन्तु सवाल यह उठता है यह सब अच्छे लोग कहाँ से आते हैं ? क्या आप जानते हो? याद रखो कोई भी व्यक्ति स्वर्ग से उतर कर नहीं आता, न ही कोई व्यक्ति संत पैदा होता है, और न ही शैतान। ऐसे परिवेश में आप अच्छे व्यक्ति को कहाँ से तलाश करेंगे? निश्चित रूप से एकमात्र उत्तर आपके सामने आता होगा। और वह है ''परिवार''। इसलिए हम इस बात पर विचार करें कि यह अच्छा परिवार कहाँ से आता है।

1. परिवार का निर्माण ईश्वर की योजनाः– हम उत्पत्ति ग्रन्थ में पढ़ते हैं ''अकेला रहना मनुष्य के लिये अच्छा नहीं। इसलिए मैं उसके लिए एक उपयुक्त सहयोगी बनाऊँगा।'' (1:18)

जानवरों के बीच मनुष्य अकेलेपन का अनुभव कर रहा था इसलिए ईश्वर ने मनुष्य के लिए एक उपयुक्त सहयोगी बनाया जो कि मनुष्य का मांस का मांस और हड्डी की हड्डी। इस प्रकार जब एक पुरुष एक स्त्री के साथ जुड़ता है तो वह दो नहीं बल्कि ईश्वर की योजना के अनुसार एक ही होता है ''इस तरह अब वह दो नहीं बल्कि एक शरीर है; इसलिए जिससे ईश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करें।'' (मत्ती 19:6)

दो नदी जो अलग–अलग जगह से बह कर आती है और एक जगह पर जुड़ जाती हैं तो वह दो नहीं बल्कि एक बड़ी नदी बनकर बहती है। इसलिए विवाह एक संस्कार है जिसका रचयिता स्वयं ईश्वर है और उस संस्कार को तोड़ने का अधिकार किसी भी मनुष्य को ईश्वर ने नहीं दिया है। यही वजह है कि विवाह संस्कार तीन लोगों के बीच में होता है। लड़का, लड़की और प्रभु येसु। हर विवाह संस्कार में प्रभु येसु महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं और उस प्रभु येसु को वैवाहिक जीवन को अत्यधिक महत्व देना चाहिए। तब परिवार रूपी गाड़ी सही दिशा में चलने लगती है। तब वहाँ से सबकुछ अच्छा ही होगा। परिवार में कोई भी बॉस नहीं होता। क्योंकि परिवार का बॉस तो सिर्फ प्रभु येसु है। परिवार के सभी सदस्य एक दूसरे के सहयोगी मात्र हैं। ऐसे परिवेश में ही हमारा मकान घर बन जायेगा अन्यथा हमारा घर केवल मकान बनकर रह जायेगा, ''घर में प्रवेश कर उन्होंने बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा और उसे साष्टांग प्रणाम किया।'' (मत्ती 2:11)

प्रभु येसु के परिवेश से गौशाला घर में बदल गया। गौशाले की गंदगी येसु के आगमन से पवित्रता में बदल गई। प्रभु येसु अपने वचनों में कहते हैं कि समझदार मनुष्य अपने घर की नींव को चट्टान पर लगाता है। प्रभु येसु हमारे परिवारों की चट्टान हैं। जो हमें हर प्रकार के आँधी और तूफान से बचाता है और हमें सुरक्षित बनाये रखता है।

2. परिवार का विनाश शैतान की योजनाः– आज संसार भर में परिवार टूट रहे हैं। इसके अनेक कारण हो सकते हैं। लेकिन मुख्य कारण यह है कि जिस परिवार में ईश्वर के लिए कोई जगह नहीं है उस परिवार में शैतान निवास करता है। जो धीरे–धीरे परिवार को बर्बाद करता है। धर्मशास्त्र बताता है कि केवल मूर्ख व्यक्ति अपने घर की नींव को बालू पर लगाता है जिसका नतीजा सिर्फ और सिर्फ बर्बादी है।

बड़े दुःख की बात है कि आज बहुत सारे ख्रीस्तीय परिवार सोशल मीडिया के द्वारा संचालित किये जा रहे हैं जैसे टी.वी. मोबाइल, इन्टरनेट, वॉहटसअप आदि। आज मनुष्य के जीवन का संचालन सोशल मीडिया के हाथों

निर्भर है और वही बताता है कि मनुष्य को कब सोना चाहिए कब उठना चाहिए कब जाना चाहिए कब आना चाहिए आदि। मनुष्य पूर्ण रूप से मीडिया के हाथों गुलाम हो चुका है। ऐसे में उसके पास न ही एक दूसरे के लिए समय है और न ही ईश्वर के लिए इस प्रकार बहुत सारे परिवार बरबाद हो चुके हैं और बहुत सारे परिवार अनैतिक मूल्यों के वजह से बर्बादी के कगार पर हैं। परिवार में कोई भी किसका सहयोगी प्रतीत नहीं हो रहा है। फिलहाल बस शैतान ही परिवारों में बॉस बन चुका है।

3. परिवारों को पवित्र करने प्रभु येसु परिवार में आये :– कितने सौभाग्यशाली हैं हम सभी जो कि ईश्वर स्वयं हमारे गौशाले जैसे पापमय गंदगी से भरे परिवारों को अपने पावन उपस्थिति से पवित्र करने इस दुनिया में आये, ''जितनों ने उसे अपनाया और जो उसके नाम में विश्वास करते हैं उन सबों का उसने ईश्वर की संगति बनने का अधिकार दिया है।'' (योहन 1:12)

आज हम सबों को हमारे पारिवारिक जीवन पर विचार करने की जरूरत है जैसे की नबी हग्गय बताते हैं–''तुम अपनी स्थिति पर विचार करो। तुमने बहुत बोया, किन्तु कम बुनते हो, तुम पीत हो किन्तु तुम्हारी प्यास नहीं बुझती, तुम खाते हो तो हा, किन्तु तुम्हें त्रप्ती नहीं मिलती; तुम कपड़े पहनते हो किन्तु तुम्हारा शरीर गरम नहीं रहता; मज़दूर अपना वेतन तो पाता है किन्तु उसे छेद वाली थैली में रखता है।'' (हग्गय 1:6)

यह सब इसलिए हो रहा है कि हमने हमारे परिवार रूपी गाड़ी को शैतान के हाथों सौप दिया है और वह हमें नरक की ओर ले जा रहा है। इसलिए हमें गम्भीर रूप से अपनी स्थिति पर विचार करते हुए सच्चे पश्चाताप के साथ पाप स्वीकार करने की ज़रूरत है। जिससे की फिर एक बार प्रभु येसु हमारे परिवार रूपी गाड़ी को चलाये और हमें स्वर्ग की ओर ले चलें इस सिलसिले में निम्न कार्य मुख्य हैं।

1. परिवारिक प्रार्थना
2. व्यक्तिगत प्रार्थना
3. पवित्र शास्त्र का अध्ययन
4. संस्कारों के प्रति रुचि
5. ख्रीस्तीय आदर्शमय जीवन
6. ख्रीस्तीय साक्षी

अगर हम इन मूल्यों पर (सिद्धान्तों) पर आधारित होकर जीवन बितायेंगे तो निश्चित तौर पर हम सबों के परिवार अच्छे होंगे और हमेशा अच्छे बनें रहेंगे और इन परिवारों से आने वाला हर एक व्यक्ति अच्छा ही होगा क्योंकि अच्छे पेड़ से ही अच्छा फल आता है।

फा. फ्राँसिस, बरेली

How to Help Save the Environment

Want to help save the environment? Taking steps to conserve and reuse is easier than you might think. You can do your part to help save the environment just by changing your daily habits. For starters, try decreasing your energy and water consumption, changing your eating and transportation habits, and adapting your home and yard to be more environmentally friendly.

Changing Your Daily Habits

1. **Switch off anything that uses electricity when not in use.** If you're not using it, turn it off. This goes for lights, televisions, computers, printers, and so on.

* Put timers on lamps and use them to turn off lamps at the same time each day. Timers like these can be found in hardware stores and they can be plugged into outlets, then control the power to your lamp.

2. **Unplug devices when possible.** Leaving devices plugged in, such as laptop chargers or toasters, can use "phantom" energy. Even when an appliance is turned off, it may still use power.[1] It is best to unplug anything that you do not anticipate using in the next 36 hours (or more).

* Use a power strip to turn lots of things off with the flip of a single switch. You can plug all your devices in one area—say, your computer—into a power strip. When you're done, simply turn the power strip off with the switch.

* Measure the energy your devices use, or look up typical energy use. To measure usage yourself, use a Kill-a-Watt. You plug an appliance in through the Kill-A-Watt, and it measures the power use. This tool can also tell you whether a particular appliance or device draws power when it is turned off.

3. **Trade in your dryer for a good old-fashioned clothesline**. Air drying leaves your clothes smelling fresh and is environmentally friendly. Tumble dryers are among the biggest energy users in most households, after the refrigerator and air conditioner. If you do use a dryer, make sure to keep the vent clear, for safety as well as efficiency.

4. **Run your air conditioner sparingly or not at all.** Air conditioners use a great deal of electricity. Use natural ventilation or a fan to keep cool, as much as possible.

* If you do use an air conditioner, set it to a slightly lower temperature than outside. Remember that setting the temperature lower uses more electricity, and it won't cool things off any faster.

5. **Close the heating and air conditioning vents in your home.** If you are not using certain rooms in your house, close the vents in these rooms, and close the doors. Doing this consistently will reduce the amount of energy squandered by heating or cooling seldom occupied spaces.

6. **Don't use electronic exercise machines.** Instead of using exercise equipment, use a real bicycle (or a unicycle), or walk to get to nearby destinations or for pleasure. Calisthenics, push-ups, and other bodyweight exercises work, as well.

7. **Use a warm blanket or sweater in winter.** Bundle yourself up and lower your thermostat by a few degrees. Aim to set your thermostat at 68 degrees F in the winter, perhaps even lower at night. Every degree above this will generate about 6-8% additional energy output.[2]

8. **Conserve water**. The average family of four in the U.S. uses about 400 gallons of water every day.[3] Make conscious choices to lower your consumption of water.

* Take shorter showers or fill the bathtub only one-quarter to one-third full.
* Turn off the faucet while you brush your teeth.
* Install low flow faucets (taps) or aerators, low-flow shower heads, and low-flush toilets.
* Run your dishwasher only when it is completely full.
* Wash full loads of laundry in a washing machine. Choose a front-load machine if possible.
* If you hand wash your car, park it on your lawn and use buckets and sponges. Use the hose to rinse. Use a hose nozzle to stop the water or turn the hose off between rinses. Keep in mind however, that the soap and other cleaning products might go down the storm drain (if you have one), leading to pollution.
* If you have a swimming pool, use pool covers to reduce evaporation and keep leaves out.
* Plant drought tolerant landscaping, and consider xeriscaping. Maintain your outdoor irrigation and water no more than is necessary.

9. **Recycle all you can.** If you have curbside recycling, use it. Be sure to separate your recycling into glass, metal, paper and so on.

* Take special trips to a recycling center if you don't have curbside recycling, or if you need to recycle certain materials not accepted by your recycling service.

10. **Avoid using disposable items**. Anything you use only a few times and throw away consumes resources only to spend centuries in a landfill.

* Carry your own reusable cup or water bottle, eating utensils, and clothes shopping bags with you. Pack a waste-free lunch.
* Use rechargeable batteries instead of disposable batteries. Batteries not only take up landfill space, as they can't be incinerated. They also can leak acid into the Earth.
* Dispose properly of hazardous waste. Many materials, including batteries, fluorescent light bulbs, e-waste (most anything with batteries or a plug), cleaning products, pharmaceuticals, pesticides, automotive fluids, and paint, should never be disposed in a landfill, sanitary sewer, or storm sewer. Instead, contact your city for proper disposal opportunities.

11. **Use only as much toilet paper as you need.** Don't unwind a mile of it for one little wipe. Be reasonable. Go easy on the paper towels, too, and use a washable cloth or sponge for most of your kitchen cleanup.

* For the paper products you do use, look for products made from 80-100% recycled paper, preferably with a high post-consumer content.
* For most household cleaning, look for reusable terry cleaning cloths. They are inexpensive,

especially when bought in bulk, and can be washed and reused hundreds of times.

12. **Consider using cloth diapers**. Cloth diapers have come a long way from the things with pins and plastic covers. You will save a fortune (especially if you have more than one child), keep potentially dangerous chemicals away from your baby's skin, and do a good thing for the planet while you're at it.

13. **Stop your junk mail from coming**. If you get several catalogs which you do not need, call and ask them to stop sending then to you.

* Sign up at Opt Out Prescreen's website (https://www.optoutprescreen.com) to stop unwanted credit card solicitations for either 5 years or permanently.

14. **Be a mindful consumer.** Ask yourself how your purchases are impacting other people and the natural environment.

* Do not buy what you do not need. Besides saving money, you'll save resources if you don't purchase a lot of excess stuff.

* Buy for durability. For items you do buy, look for things which will last a lifetime. Search "buy it for life" to find forums and recommendations for durable products.

* Buy used. Reuse is a far higher purpose for used goods than the landfill, plus you'll save money.

Changing Your Eating Habits

1. **Eat less meat** and dairy. Meat and dairy production is highly resource-intensive and inefficient. Attempting vegetarianism or veganism is definitely one of the best things you can do for the environment and also for your health.[4]

o Meatless Monday is a national non-profit public health campaign that encourages people to give up meat one day a week. Visit the site for some meatless recipes.

2. **Don't drink coffee from K-cups.** K-cups, or the mini pods of ground coffee for Keurig coffee makers, are single use and typically thrown out (although they can be recycled if users dissemble them into paper, plastic and metal). Billions of mini cups of ground coffee were sold in 2014, and the number of cups that ended up in landfills could circle the earth 12 times.[5] Brew coffee in a regular coffee pot or French press instead.

o Use a mug or other reusable cup for your coffee instead of a disposable cup.

o If you love the convenience of single-serve coffee and have already invested in a Keurig machine, look for a washable, refillable cup. You'll still save money and resources, compared to purchasing the individual cups.

3. **Buy local food**. Transporting food from far-off locations takes a toll on the environment, as it must be shipped in trucks, by rail or by ship, all of which produce pollutants. Buying food that is sourced locally will help eliminate or reduce transportation impacts.[6]

o Visit farmers markets to find local vegetables and fruits, or use a CSA (community-supported agriculture) service to get fresh produce on a regular basis.

4. **Avoid excess packaging.** Oftentimes, food companies expend just as much energy creating the packaging for food products as is expended in producing the actual food. Try not to buy food that is individually wrapped or buy in bulk.[7]
5. **Don't waste food.** Plan your meals so that you don't cook more than you will eat. Store your leftovers and use them up at your next meal. If you do have an overrun of food, such as after a party, share it with friends.
6. **Use reusable bottles for water.** Most tap water in developed countries is safe to drink, which means that buying bottled water is unnecessary. Buy a glass or metal bottle and fill it with water.

- o Request a water quality report from your city if you are concerned about the quality of the water.
- o A water filter is generally unnecessary, but even a simple one can improve the taste. Remember, however, that water softeners and reverse osmosis systems waste a lot more water than they deliver.
- o Fill a pitcher with tap water and chill it in your refrigerator.

LET US PRAY

JULY, 2015

BAREILLY DIOCESAN PRIESTS BIRTHDAYS

1	Fr. Uday Kumar D'Souza	03rd July	Shahjahanpur
2	Most Rev. Anthony Fernandes	06th July	Kathgodam
3	Fr. Julian Pinto	06th July	Kathgodam
4	Fr. Vijay Tellis	07th July	Bareilly
5	Fr. Pius Menezes	11th July	Pilibhit
6	Fr. Robert Mathias	19th July	Harunagla
7	Fr. Roman Dias	21st July	Rudrapur
8	Fr. Marian Faustine Pinto	29th July	Dhamola

CHURCH FEAST DAY

1.	St. Thomas Church	3rd July	Nawabganj
2.	St. Benedict Church	11th July	Pithoragarh
3.	St. Bonaventure	15th July	Ranikhet
4.	Our Lady of Carmel Church	16th July	Gadarpur
5.	Our Lady of Carmel Church	16th July	Champawat
6.	St. Lawrence of Brindisi Church	21st July	Izatnagar
7.	St. Anne Church	26th July	Rudrapur

स्वच्छ वातावरण - स्वस्थ जीवन

सुचेतना ने इस वर्ष "स्वच्छ वातावरण– स्वस्थ जीवन" के मुद्दे के आधार पर प्रत्येक कार्यकर्ता को कम से कम दो गांवों को चुनने का आग्रह किया है। इन गांवों को उपरोक्त मुद्दे पर आदर्श बनाकर अन्य गांवों को भी एक साथ लेकर चलने की सलाह दी जाती है। उपरोक्त दोनों आदर्श गाँवों के मूल्यांकन के मानक निम्नलिखित होंगे।

1. उपरोक्त दोनों आदर्श गाँवों में वर्ष के अन्त तक शत–प्रतिशत व्यक्तिगत शौचालय होने चाहिए। ग्राम के महिला, पुरुष एवं बच्चों को शौच के लिए सड़क, खेत, खलिहान के उपयोग करने की आदत से मुक्ति मिलनी चाहिए।
2. उपरोक्त दोनों आदर्श गाँवों में वर्ष के अन्त तक घरों के आसपास व नालियों एवं सड़कों में कूड़ा कचरा न फेंक ना, उन्हें साफ रखने के साथ व्यक्तिगत साफ सफाई भी सुनिश्चित होनी चाहिए।
3. उपरोक्त दोनों आदर्श गाँवों में कूड़ेदान अथवा जैविक और अजैविक कूड़ा डालने की व्यवस्था सुनिश्चित होनी चाहिए।
4. उपरोक्त दोनों आदर्श गाँव पोलीथीन मुक्त होने चाहिए।
5. पीने के पानी का सदुपयोग होना, सरकारी नलों के आस पास की साफ–सफाई एवं तालाबों का संरक्षण सुनिश्चित होना चाहिए।
6. गाँव के प्रत्येक परिवार में जड़ी–बूटी के कम से कम चार पौधे एवं घर की खाली पड़ी जगहों पर शाक– सब्जियों के पौधे अवश्य होने चाहिए जैसे– तुलसी, एलोवीरा, गेंदा, अड़ूसा, गुड़हल आदि।
7. दोनों आदर्श गाँवों के प्रत्येक परिवार को कम से कम एक फलदार वृक्ष लगाना एवं उसकी देखभाल करना सुनिश्चित होना चाहिए।
8. गाँवों के प्रधान, सफाई कर्मचारी, ब्लाक स्तर एवं मिडिया स्तर पर नेटवर्किंग अवश्य होनी चाहिए।

हमने अपने ढंग से जीना शुरू कर दिया है, बिना इसकी फिक्र किये कि हम प्रकृति का ही एक हिस्सा हैं। और हमारे पास उस प्रकृति को समझकर उस के सहयोग में ही जीने के अतिरिक्त शांत होने का कोई उपाय नहीं है।

लेकिन आदमी ने अपने को कुछ ज्यादा समझदार समझकर बहुत सी नासमझियां कर ली हैं। खयाल में आने वाली इस समझदारी के कारण वह सारे संतुलन भीतर से तोड़ता चला जा रहा है।

जब तक हमारे पास रोशनी नहीं थी तब तक सारे संसार में नींद की बीमारी किसी आदमी को भी नहीं थी। अभी भी आदिवासी या जिन तक बिजली नहीं पहुंची उन्हें नींद न आने जैसी कोई बीमारी नहीं है। आदिवासी जानता ही नहीं कि इन्सोमनिया जैसी कोई बीमारी होती है।

प्रकृति पूरे वक्त संतुलन मांगती है। तो जो लोग बहुत विश्राम में हैं, उन्हें श्रम करना पड़ेगा। जो लोग बहुत श्रम में हैं, उन्हें विश्राम करना पड़ेगा। और जो व्यक्ति इस संतुलन से चूक जायेगा, जीवन का आनन्द तो दूर की बात है, वह जीवन के साधारण जो सुख मिल सकते हैं, उनसे भी वचिंत रह जायेगा।

प्रकृति अर्थात हमारे पर्यावरण को हमारी कृपा की आवश्यकता नहीं है। यदि हमें तपती दोपहर में अपने बच्चों को पीने के पानी की एक बोतल के लिए लाईन में खड़े होने से बचाना है, तो पानी को बचाना ही पड़ेगा।

इसके लिये हम सिर्फ इतना करने का कष्ट करें कि – साफ पानी से घर के सामने की सड़क ना धेयें, कपड़ों को डिटरजेंट से धोयें एवं धुवावन के इस पानी को पौधों के गमलों में, फर्श, टॉयलेट, सड़क, गाड़ी आदि धोने के लिए उपयोग करें।

पेट्रोल एवं डीजल से चलने वाली गाड़ियों का कम से कम इस्तेमाल करें। सप्ताह में एक दिन साईकिल चलाने या

पैदल चलने के लिए तय करें। ये आपकी जेब एवं स्वास्थ्य दोनों के लिए उचित हौगा।

जिनके पास अपनी जमीन है, वे उसका एक भाग वृक्ष उगाने, पुष्प खिलाने, जड़ी बूटी पौधे लगाने के लिए सुरक्षित रखें। तुलसी के पौधे में वायु प्रदूषण का परिशोधन करने की अदभुत क्षमता है।

अधिकतर फलदार वृक्ष लगायें। अमरूद के फल का वृक्ष साल भर में फलों की दो फसलें देता है, ये स्वास्थ्य के लिए उत्तम फल माना जाता है। जिनके पास अपनी जमीन न हो, वे सरकारी या दूसरों की जमीन में उनके मालिकों की अनुमति से उन्हीं के लिये अपने परिश्रम से पेड़ लगाने एवं उन्हें सींचने की संस्कृति अपनायें।

घर में बिजली, पानी का इस्तेमाल कम से कम क रें एवं उपयोग करने के बाद स्विच ऑफ करने, नलों को ठीक से बन्द करने की परम्परा पहले स्वयं सीख लें, बाद में बच्चों को अवश्य सिखायें।

पुराने खराब हो चुके मोबाइल, कम्प्यूटर आदि रिसायक्लिंग के लिये सम्बद्ध एजेंसियों को ही दें। इस प्रकार के कचरे को इधर–उधर न फेंकें।

हम सब एक बड़ी फूल कर बैठते हैं कि प्राकृतिक संसाधन अनंत हैं, असीमित हैं। चाहें वह भूगर्भ जल, बिजली, कोयला, कच्चा तेल, गैस यह सब कुछ सीमित है। पर्यावरण को बचाने की दिशा में हम जो भी छोटा–मोटा प्रयास करते हैं, भविष्य में इसका बहुत लाभ होगा।

गिरीराज, काशीपुर

युवा चेतना

लक्ष्य बनायें

ज्ञान आपको मंजिल तक पहुँचने में मदद करता है बशर्ते कि आपको अपनी मंज़िल का पता हो।

प्राचीन भारत में एक ऋषि अपने शिष्यों को तीरंदाजी की कला सिखा रहे थे। उन्होंने लक्ष्य के रूप में एक लकड़ी की चिड़िया रखी और अपने शिष्यों से उस चिड़िया की आँख पर निशाना लगाने को कहा। उन्होंने पहले शिष्य से पूछा कि तुम्हें क्या दिख रहा है। शिष्य ने कहा, ''मैं पेड़, टहनियाँ, पत्ते, आकाश, चिड़िया और उसकी आँख देख रहा हूँ।''

ऋषि ने उस शिष्य का इंतज़ार करने को कहा। तब उन्होंने दूसरे शिष्य से वही सवाल किया और दूसरे शिष्य ने जवाब दिया, ''मुझे सिर्फ चिड़िया की आँख दिखाई दे रही है।'' तब ऋषि ने कहा, ''बहुत अच्छा, अब तीर चलाओ।'' तीर सीधा जाकर चिड़िया की आँख में लगा।

इस कहानी से क्या शिक्षा मिलती है? अगर हम अपने मकसद पर ध्यान न लगाएँ तो अपने लक्ष्य को हासिल नहीं कर सकते। अपने मकसद पर ध्यान लगाना एक मुश्किल कार्य है, मगर यह एक गुण है जिसे सीखा जा सकता है।

जीवन के रास्तों पर चलते हुए अपनी आँखें अपने लक्ष्य पर जमाए रहें। आम पर ध्यान दें, गुठली पर नहीं।

On the journey to life's highway, keep you eyes upon the goal. Focus on the donut, not upon the hole.

अपनी नज़र लक्ष्य पर रखें

4 जुलाई 1952 करे फ्लोरेंस चैडविक (Florence Chadwick) कैटलिना चैनल को तैरकर पार करने वाली पहली महिला बनने वाली थी। वह इंग्लिश चैनल को पहले ही पार कर चुकी थी। सारी दुनिया देख रही थी। चैडविक ने घने कोहरे, हड्डियों तक कँपकँपाने वाली ठंड और कई बार शार्क मछलियों का मुकाबला किया। वह किनारे पर पहुँचने का प्रयास कर रही थी, लेकिन जब भी उसने अपने चश्मे से देखा उसे घना कोहरा ही दिखाई दिया।

किनारा न दिखाई देने की वजह से उसने हार मान ली। चैडविक को सदमा तब लगा जब उसे पता चला कि वह किनारे से सिर्फ आधा मील दूर रह गई थी, उसने हार मान ली थी, इसलिए नहीं कि बाधाओं ने उसकी हिम्मत तोड़ दी थी बल्कि इसलिए कि उसे अपना लक्ष्य कहीं नज़र नहीं आ रहा था। उसने कहा था, ''मैं बहाने नहीं बना रही हूँ। अगर मैंने किनारा देखा होता तो मैं जरूर कामयाब हो जाती।''

दो महीने बाद, वह फिर वापिस गई और उसने कैटलिना चैनल को पार कर लिया। इस बार खराब मौसम के बावजूद भी उसने अपने लक्ष्य पर निगाह रखी और न केवल सफल रही, बल्कि उसने पुरुषों के रिकॉर्ड को भी दो घंटे के समय से तोड़ा।

लक्ष्य क्यों जरूरी है ?

Why are goals important?

तेज़ धूप और शक्तिशाली मैगनीफाइंग ग्लास (magnifying glass) के बावजूद भी कागज को आग तब तक नहीं पकड़ सकती, जब तक आप उसे हिलाते रहेंगे। लेकिन अगर थोड़ी देर आप उसे स्थिरता से पकड़े रहेंगे तो एकदम कागज़ आग पकड़ लेगा। ध्यान लगाने और फोकस (focus) करने में ऐसी ताकत होती है।

एक बार एक यात्री एक चौराहे पर रुका। उसने एक बुजुर्ग से पूछा, ''यह सड़क मुझे कहाँ ले जाएगी?'' बुजुर्ग ने पलट कर पूछा, 'तुम कहाँ जाना चाहते हो?'' उस यात्री ने कहा, ''मैं नहीं जानता।'' बुजुर्ग ने कहा, ''तब कोई भी सड़क ले लो। क्या फर्क पड़ेगा?'' कितनी सही बात है। जब हम यह जानते ही नहीं कि हमें कहाँ जाना है तो कोई भी सड़क हमें वहाँ ले जाएगी।

मान लीजिए कि आपकी फुटबॉल की टीम खेलने के लिए पूरे उत्साह के साथ तैयार है, तभी अचानक कोई गोल पोस्ट (goal post) को हटा देता है। तब खेल क्या होगा? अब वहाँ कुछ भी नहीं बचा। आप स्कोर कैसे रखेंगे? आप कैसे जानेंगे कि आप पहुँच गए हैं? बिना दिशा के उत्साह जंगली आग की तरह है जिससे मायूसी ही मिलती है। लक्ष्य दिशा का अहसास कराते हैं।

क्या आप किसी ऐसी ट्रेन या बस में बैठेंगे, बिना यह जाने कि वह कहाँ जा रही है ? इसका सीधा–सा जवाब होगा, नहीं। बस या ट्रेन में तो नहीं बैठेंगे, लेकिन ज़िंदगी के सफर में बिना लक्ष्य के लोग चलने को क्यों तैयार हो जाते हैं?

सपने Dreams

लोग लक्ष्यों को अक्सर इच्छा या सपने समझने की भूल करते हैं। सपने और इच्छाएँ सिर्फ चाहत के सिवा कुछ नहीं हैं। चाहतें कमज़ोर होती हैं। चाहतें तब मज़बूत हो जाती हैं जब इनकी बुनियाद नीचे लिखी बातों से बनती है:–

– दिशा (direction)
– समर्पण (dedication)
– दृढ़ निश्चय (determination)
– अनुशासन (discipline)
– निश्चित समय (deadlines)

यही वे बाते हैं जो इच्छा और लक्ष्यों में अंतर करती हैं। लक्ष्य वे सपने हैं जिनमें निश्चित समय और हासिल करने का प्लान होता है। लक्ष्य मूल्यवान या मूल्यहीन हो सकते हैं। लगन ही सपनों को असलियत में बदलती है, न सिर्फ इच्छा।

सपनों को असलियत में बदलने के कदम :

1. लक्ष्य निश्चित और साफ लिखें।
2. इसे हासिल करने का प्लान बनाएँ।
3. पहली दो बातों को रोज़ दो बार पढ़ें।

ज्यादातर लोग अपने लक्ष्य क्यों नहीं बनाते ?

Why don't more people set goals?

इसके कई कारण हैं, जिनमें से कुछ नीचे लिखे हैं:

1. निराशावादी नज़रिया (A pessimistic attitude)– संभावनाओं की बजाए हमेशा रास्ते की बाधाओं को देखना।

2. असफलता का डर (Fear of failure)–अगर मैं नहीं कर सकता तो क्या होगा ? लोगों के अवचेतन मन में ये विचार रहते हैं कि अगर वे लक्ष्य बनाएँ और उन्हें हासिल न कर पाएँ तो वे फेल हो गए, दूसरी तरफ यह सोचते हैं कि अगर वे लक्ष्य ही न बनाएँ और उन्हें हासिल ही न कर पाएँ तो वे फेल नहीं हुए। मगर ऐसे लोगों की शुरुआत ही असफलता से होती है।

3. इच्छा या अभिलाषा की कमी (A lack of ambition)– यह हमारे जीवन मूल्यों का नतीजा है और साथ–ही–साथ एक भरपूर ज़िंदगी जीने की इच्छा का अभाव। हमारी बंद दिमाग़ी हमें आगे बढ़ने से रोकती है। एक मछुवारा था जो जब भी कोई बड़ी मछली पकड़ता तो उसे वापिस नदी में फेंक देता था, और सिर्फ छोटी मछलियों को अपने पास रहने देता। उसकी इस अजीब हरकत को देखने वाले एक आदमी ने उससे पूछा कि वह ऐसा क्यों कर रहा है? इस पर उस मछुवारे ने जवाब दिया, ''मेरी कड़ाही बहुत छोटी है।'' बहुत से लोग जीवन में सफलता इसलिए नहीं प्राप्त कर पाते क्योंकि वे उस मछुवारे की तरह छोटी कड़ाही ही लेकर घूमते हैं। यही बंद दिमागी है।

4. अस्वीकार किए जाने का डर (A fear of rejection)–अगर मैं सफल नहीं हो पाया, तो लोग क्या कहेंगे?

5. टालमटोल (Procrastination)–''कभी–न–कभी तो मैं अपना लक्ष्य बनाऊँगा।'' यह इच्छा के अभाव की तरह ही है।

6. कमज़ोर स्वाभिमान (Low self-Esteem)–जब इंसान अपनी अंदरूनी शक्ति से नहीं चलता और जीवन में प्रेरणा का अभाव होता है तो यह कमज़ोर स्वाभिमान को दिखाता है।

7. लक्ष्य का महत्व न समझना (Ignorance of the importance of goals)–किसी ने उन्हें इसके बारे में सिखाया नहीं और उन लोगों ने कभी लक्ष्य के महत्त्व को समझा ही नहीं।

8. लक्ष्य कैसे बनता है–ज्ञान की कमी (A lack of knowledge about goal setting)–लोग लक्ष्य बनाने के तरीकों को नहीं जानते। उन्हें एक साफ नक्शे की ज़रूरत होती है जिसे वे गाइड बनाकर अपना सकें।

प्रभु मुझे शान्ति का साधन बना

इस भागदौड़ भरी जिन्दगी में चारो ओर का वातावरण डरावना क्यों न हो। फिर भी अपने ईश्वर के हाथों में मैं सुरक्षित हूँ। इस विचार से हम शान्ति का अनुभव कर सकते हैं। जीवन का आनन्द लूट सकते हैं। हमें रोग, दर्द, पराजय, नुकसान आदि कई बातों का मुकाबला करना पड़ेगा, तभी ईश्वर मेरे साथ है, जो देखभाल करते हैं। यही पहचान हमें शान्ती और आनन्द प्रदान कर सकती है।

पवित्र आत्मा के वरदानों में तीसरा वरदान होकर शान्ति को सन्त पौलुस दिखाते हैं। हमारा प्रभु ईश्वर ईसा मसीह आप लोगों को अनुग्रह तथा शान्ति प्रदान करे। (कुरि. 1:3)। सन्त की सलाह है कि हम ईसा से शान्ती पायें। मगर कई मनुष्य दुनिया से शान्ति अपनाने का प्रयास करते हैं। इसके लिए वह धन, मद्य, नशीली दवाइयाँ बुरी दोस्ती आदि बुराइयों को स्वीकार करते हैं। मगर इनसे शान्ति नहीं मिलेगी, यही नहीं जो थोड़ी शान्ति हमारे पास है वह नष्ट हो जायेगी। धन्य मदर टेरेसा ने शान्ति के मार्ग दिखा दिये हैं। चुप्पी का फल है : प्रार्थना, प्रार्थना का फल है : प्रेम–प्रेम का फल है, सेवा और सेवा का फल है शान्ति। 1979 में इस माता ने शान्ति के लिए नोबेल पुरस्कार पा लिया। वे हमसे कहती हैं कि सहजीवों को प्यार करें, दु:खियों को सान्त्वना दो, उनकी सेवा करो आदि। ये सब है–शाश्वत शान्ति के मार्ग। दुनिया भर में शान्ति लानी है तो पहले हम–अपने हृदय में उसकी स्थापना करें। हृदय से परिवार की ओर फिर चारों ओर वह फैलेगी। किन्तु जिसका मन अशान्त है, उससे जुड़े हुये व्यक्तियों को बैचेनी होगी। मिसाल के तौर पर देखें यदि कोई घर में झगड़ा करके निकला तो वह यात्रा में, कर्म क्षेत्र में, जिनसे भी मुलाकात करेगा सबों में अशान्ति के बीज बोयेगा।

ईश्वर–विश्वास भ्रातृ प्रेम और क्षमा शान्ति के स्रोत हैं दूसरे के प्रति बैर का भाव छोड़ें उनको क्षमा करें, ईश्वर पर आस्था रख कर कठिनाइयों का मुकाबला करें। आध्यात्मिक विचारक संत थोमस अक्वीनास ने कहा : ईश्वर के प्रति जो शान्ति में नहीं रहते थे अपने आप से शान्ति का अनुभव नहीं कर पायेंगे। जो अपने से शान्ति का अनुभव करते वे दूसरों से शान्ति का अनुभव नहीं कर सकेंगे।

शान्ति–शालोम–वह ईसा ही हैं। पुनजीवित ईसा ने शिष्यों को प्रकट होकर कहा, मैं तुम्हें शान्ति मिले (लूकस 24:36)। उन्होंने कहा यह सलाह दी ईसा से शान्ति पाकर दूसरों को बाँट दे (लूकस 10:15)। अपनी विदाई के बारे में सोच कर उन्होंने शिष्यों से कहा मैं तुम्हारे लिए शान्ति छोड़ जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हें प्रदान करता हूँ (योहन 14:27) ईसा जो शान्ति देते हैं, उसे पाने और बाँट देने का कर्त्तव्य हमें निभाना है। हर मिस्सा में हम शान्ति के लिए, शान्ति स्वरूप ईसा की निरन्तर मौजूदगी के लिए प्रार्थना करते हैं। लैटिन मिस्सा में पुरोहित कहते हैं कि प्रभु तुम्हारे साथ हो जबकि सीरो मलाबार समाज की मिस्सा में कहते हैं कि शान्ति तुम्हारे साथ हो। शान्ति को मसीहा रूपी व्यक्ति होकर पूजन विधि से माना जाता है। पवित्र मिस्सा का यह अभीवादन पढ़ाता है कि शान्ति स्वरूप मसीह में हर कोई शान्ति पा सकता है। इस प्रकार आराधना दलों के सदस्य आपसी भ्रातृत्व की घोषणा के रूप में शान्ति की आशंसा देते हैं। हर मिस्सा में यह आशंसा दी जाती है।

आशीर्वचन के तहत ईसा ने कहा: धन्य है वे जो मेल कराते हैं, वे ईश्वर के पुत्र कहलायेंगे (मति 5:9)। हम चाहे कहीं भी हो, घर में, समाज में, दुनियाँ भर में शान्ती के समर्थक और वक्ता हो जाये। इसके लिए पहले ईसा के लिए हृदय में जगह तैयार करें। साथ ही सन्त फ्रांसिस असीसी के साथ प्रार्थना करें –

प्रभु ! आप मुझे अपनी शान्ति का साधन बनायें। जहाँ बदला है, वहाँ प्रेम: जहाँ द्वेष है वहाँ क्षमा : जहाँ शंका है वहाँ विश्वास : जहाँ निराशा है वहाँ आशा, जहाँ अंधकार है, वहाँ रोशनी : जहाँ दु:ख है, वहाँ खुशी के बीज में बोऊँ, आमेन।

एन्थोनी बि.एल., पीलीभीत

बाल चेतना

नये जोश के साथ नई शुरुआत

प्रिय बच्चों और बाल मित्रों,

चेतना दीदी की आरे से जय येसु की। आप सबको यह बताने में मुझे बड़ी खुशी हो रही है कि इस माह से आप सभी बच्चों को समर्पित ''बाल चेतना'' विभाग आप की प्रिय पत्रिका चेतना में आरंभ किया गया है। मैं हर महीने इस अंकण के माध्यम से आप से मिलूँगी। आप भी अपने विचार, कविता, छोटे लेख, चित्र अपने पल्ली पुरोहित के द्वारा मुझे भेज दें। उन्हें इस अंकण में प्रकाशित किया जायेगा। कृपया कहीं से नकल करके न भेजें। साथ में अपना नाम, पल्ली और कक्षा लिख दें। उम्मीद करती हूँ कि आप बड़े उत्साह के साथ इस अवसर का लाभ उठायेंगे।

बहुत जल्द आपकी कक्षायें फिर शुरू होंगी। छुट्टियों के बाद स्कूल जाना अच्छा तो नहीं लगता पर आपके भविष्य के लिये शिक्षा अति आवश्यक है। समय का सदुपयोग करें और घर में पढ़ाई के लिये एक टाइम टेबल बनायें। अपने माता– पिता के सपनों को साकार करने की इच्छा जीवित रखें। इस वर्ष आप में से बहुत बच्चों ने पहला परमप्रसाद ग्रहण किया, कुछ बच्चों ने दृढ़ीकरण संस्कार ग्रहण किया। अनेक बच्चों ने क्रूसवीर शिविरों में भाग लिया। इनसे प्राप्त कृपा वरदानों की बनाये रखिये। अच्छा, अब आज्ञा दें। अगले माह फिर मुलाकात होगी। आप सबके लिये प्रार्थना करती रहूँगी। नीचे दिये लेख 'समय का मूल्य' जरूर पढ़िये।

सप्रेम, आपकी अपनी
चेतना दीदी, बरेली

समय का मूल्य

मान लीजिये कोई आपसे यह कहे – ''मैं आपको प्रतिदिन 86,400 रुपये दूँगा। इस राशि में से आप जितनी चाहे उतनी खर्च कर सकते हैं। आप इससे कुछ भी बचाकर नहीं रख सकेंगे। जो राशि खर्च नहीं की गई वह अपने आप नष्ट हो जायेगी। दूसरे दिन आपको 86,400 रुपये की राशि फिर मिलेगी। इतनी ही रकम आपको हर रोज मिलेगी।'' अब आप बतायें कि इस रकम से आप हर दिन कितने पैसे खर्च करेंगे ?

जब मैंने शिविरों में ऐसा सवाल पूछा तो किसी ने कहा–सौ रुपये खर्च करुँगा, किसी ने हजार, किसी ने पचास हजार। एक दो बच्चों ने उत्तर दिया–''मैं सारे पैसे खर्च करुँगा।'' अब यह 86,400 रुपये क्या हैं ?

दिन के चौबीस घंटे होते हैं। हर घंटे में 60 मिनट होते हैं यानि कि दिन में 1440 मिनट होते हैं। एक मिनट में 60 सेकेंड होते हैं अर्थात् एक दिन में 60×1440=86,400 सेकेंड होते हैं। चाहे प्रधानमंत्री हो या भिखारी, चाहे अफसर हो या चपरासी, बच्चा या बूढ़ा – सब के दिन में 24 घंटे अर्थात् 86,400 सेंकेंड होते हैं। समय हर पल गुजरता है। आप इसे बचाकर नहीं रख सकते हैं। बीता हुआ पल कभी वापस नहीं लौटता। तो चलिये, इस साल हर समय का सदुपये करने का प्रण लें।

चेतना दीदी

मेरा विश्वास (धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी) -12 के उत्तर

1. मानव	8. दूसरी	15. लूकस 10:30–37
2. ईसा मसीह	9. 202	16. तोबित 4:15
3. ईसा मसीह	10. कलीसिया के नियमों	17. सद्‌गुण
4. प्रेम/न्याय	11. विवाह	18. बालक येसु की संत तेरेसा
5. अन्तःकरण	12. कलीसिया	19. प्रेम/विश्वास/भरोसे
6. ईश्वर	13. परमप्रसाद	20. बारह
7. नबी मूसा	14. पर्वत पर प्रवचन/आशीर्वचन	

एक गाँव जहाँ सिर्फ लड़कियाँ करती हैं राज

बांग्लादेश की सीमा से सटा देश के पूर्वोत्तर राज्य मेघालय में एक छोटा सा गाँव है मावलीनांग। दुनिया भर से भले ही हर साल हजारों सैलानी परंपरागत तरीके पेड़ की जड़ों से बने पुल, छोटी–छोटी फूस की झोपड़ियाँ, कल–कल करते झरने और हमेशा हरियाली से भरपूर खूबसूरत प्राकृतिक नजारा देखने आते हैं, मगर पर्यटकों को एक और चीज लोगों को अपनी ओर खींचती है, वह है इस गाँव की संस्कृति, जहाँ लड़कियाँ एक तरह से राज करती हैं।

'ईश्वर का बगीचा' और भारत का गौरव या फिर 'एशिया का सबसे साफ–सुथरा गाँव' जैसे कई नामों से पुकारे जाने वाले 500 लोगों की आबादी वाले इस गाँव को आदिम जनजाति खासी लोगों का घर कहा जाता है। यह दुनिया के दुर्लभ समाजों में से एक है, जहाँ सिर्फ महिलाओं की सत्ता चलती है। जहाँ देश के और इलाकों के मुकाबले पुरुष प्रधान समाज हावी नहीं है। यहाँ छोटी–बड़ी लड़कियाँ तालाबों और झरनों में खेलते हुए नजर आ सकती हैं। कोई रोकटोक नहीं और परंपराओं की कोई बेड़ियाँ नहीं। आत्मविश्वास से भरपूर इन लड़कियों के चेहरे गजब से दमकते रहते हैं। यहाँ पर लड़की कोई न कोई काम करते हुए नजर आती है परिवार की आय में लड़कियों का खासा योगदान रहता है। घर चलाने में ये लड़कियाँ बचपन से ही परिवार का हाथ बंटाती हैं।

(साभार : दैनिक जागरण से)

कैसा होता है माँ का प्यार

माँ की ममता निराली है
वही दुनिया में सबसे प्यारी है
अगर वो हमारे साथ हो तो
हर कदम पे खुशहाली है।
माँ ने ही जीना सिखाया इस कदर
कैसे झेलती होगी वो सबके दु:ख दर्द
कोई उससे जाकर पूछें कि
क्या होता है प्यार का मतलब
हर वक्त दुआ करती है सभी के लिए
हम भी दुआ करें ईश्वर से उसके लिए
वो हमें कदम–कदम पर चलना सिखाए
और हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते जाए
माँ की प्रार्थना जिन्दगी बना देगी
खुद रोएगी मगर दूसरों को हँसा देगी
कभी भी भूलकर माँ को मत रुलाना
क्योंकि एक छोटी सी गलती पृथ्वी को हिला देगी।

– शिवानी मसीह, राम नगर

थोड़ी सी हँसी हो जाय

लोग कहते हैं कि हम अपनी गलतियों से सीखते हैं। आजकल मैं बहुत सारी गलतियाँ कर रहा हूँ। जल्द ही मैं बहुत बुद्धिमान इंसान बनूँगा।

झुंड में

बचपन में देखा था
गाँव की बकरियों को
झुंड में चलते हुए
ताकि शिकारी कुत्ते
उन पर झपट न सकें
मगर आज जब
स्कूल जाती बच्चियों को
झुंड में चलते देखा, तो लगा
शायद ! वह भी
शिकारियों से बचना चाहती हैं।

आंचल, बाजपुर

नारी के रूप

महिलाओं से पुरुष है जन्मे
उनको मानते हो अभिशाप
बदल लो अपने तेवर को
बहुत पड़ेगा तुम पर पाप
गाय सी सीधी समझकर
करते हो उस पर अत्याचार
काली रूप भी उसी का है
माननी पड़ेगी तुम को हार।

आंचल, बाजपुर

THE STOLEN COAT

It was a freezing wintr that year. To make matterss worse for Nasruddin, somebody had stolen the only coat he had. When Mullah came to know of the theft, he was beside himself with rage, cursing the thief roundly, threatening that he knew who had stolen his coat and the man had better return it, otherwise.....

Word spread quickly across town about the theft of Mullah's coat, his curses and threats against the thief and the fact that the thief had better return the coat otherwise.....

It so happened that the man who had stolen the coat also heard about the threat. What action would Mullah take against him, he wondered. Suppose he told the king, whom he was close to, the thief worried.

Not wanting to push his luck any further, that very night the thief returned to Mullah's home and left the coat behind while Nasruddin was fast asleep.

The next morning, Mullah was delighted to find his coat adn realised his threat has worked. As the neighbours gathered around him, one man inquired : "Mullah Nasruddin, what would you have done if the thief had not returned the coat?"

Everyone learned forward cursiouly to her what dreadful action Mullah had planned against the thief Mullah smiled at all the people gathered there: "Well, if the thief had not returned my coat, I would have gone to the market and purchased another one!"

There are times when we must use bluff and bluster to get something done by keeping our opponent guessing. Unable to comprehend what action we will take, the man would most likely fall for the threat and react just the way we want.

बाइबिल प्रश्नोत्तरी - 11 के उत्तर:

1. युवकों The young men
2. सिखेम में Shechem
3. बेतेल और दान Bethel and Dan
4. हाथ अकड़ गया Withered
5. अबीयाम Abijam.
6. Samaria समारिया
7. ईज़ेबेल Jezebel
8. कौवा Ravens fed him
9. 450/450
10. होरेब/Horeb
11. मन्द समीर की सरसराहट/Sound of sheer silence.
12. हज़ाएल/Hazael
13. एलीशा/Elisha
14. एलियाह ने एलीशा से/ Elijah said to Elisha
15. नाबोत/Naboth
16. कुत्ते/Dogs
17. बुरा/ Evil
18. अहाब/Ahab
19. सिदकीया/Zedekiah
20. अहज़्या/Ahaziah

समाचार दर्शन

ख्रीस्त के लिए दम्पति शिविर -धमोला

मई 28 से 30 तक धमोला पल्ली में ख्रीस्त के लिए दम्पति प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इसमें धमोला और बैलपड़ाव पल्ली के दम्पतियों ने भाग लिया। साधना का संचालन उड़ीसा और पटना से आये दल के द्वारा किया गया। प्रशिक्षण के पहले भाग में प्रभु येसु के प्रेम को परिवार में कैसे अनुभव किया जाता है, इसके बारे में जानकारी दी गई। संचालक लोगों ने अपने ही जीवन और परिवार के उदाहरणों के द्वारा अपनी बातों को लोगों के सामने रखा। यहाँ भी लोगों के लिए पापस्वीकार का आयोजन किया गया था। इस प्रशिक्षण में 14 दम्पतियों व 38 एकल भाई बहनों ने भाग लिया।

संगीत वाद्य यंत्र प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

वाद्य संगीत प्रशिक्षण कैम्प 1 जून से 16 जून तक संत जॉन पौल द्वितीय गुरुकुल में सम्पन्न हुआ। इस शिविर में पूरे बरेली धर्मप्रान्त के 80 युवक–युवतियों ने भाग लिया। धर्माध्यक्ष इग्नेशियस डिसूजा की अभिरुचि और सहयोग से पहली बार ऐसे शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में फा. स्टैनी, फा. रॉबर्ट, फा. एलियस, फा. विजय, फा. भरत, फा. फ्राँसिस, फा. मैरीयन का विशेष सहयोग रहा। सभी युवक युवतियों के प्रशिक्षण के लिए खास संगीत वाद्य अध्यापकों को नियुक्त किया गया। अभिनव मैसी और कैलब दत्त (की–बोर्ड) राहुल (गिटार) जॉय (हारमोनियम) पं. दीपक शर्मा (तबला) प्रशिक्षक रहे।

इस प्रशिक्षण के दौरन सभी को संगीत के साथ–साथ ईश्वर की महिमा तथा जीवन के गुणों को बढ़ाने का भी प्रशिक्षण दिया है। इस शिविर में योग, खेलकूद, संगीत, प्रशिक्षण, आराधना तथा बाइबिल पर आधारित फिल्में जैसे कार्यक्रमों को दिनचर्या में लागू किया गया।

इस कैम्प के दौरान सभी युवक–युवतियों को बरेली के कैथेड्रिल में 8 जून को सम्पन्न हुए येसु वाणी प्रतियोगिता में अपना हुनर दिखाने का मौका मिला। शिविर के आखिरी दिन सभी ने अपने 16 दिन के प्रशिक्षण की झलक दिखा कर सबका दिल जीत लिया।

विनी क्वारा चौरॉठ, बरेली

ख्रीस्त के लिए दम्पति शिविर - बाजपुर

बरेली धर्मप्रान्त की बाजपुर पल्ली में 25 मई 2015 से 27 मई 2015 तक तीन दिवसीय ख्रीस्त के लिए दम्पति शिविर का आयोजन उड़ीसा से आए भाई जोसफ, विजेंदर, बेनेदिक्त व बहन ज्योति के द्वारा संचालित किया गया। इसमें कई दम्पत्ति जोड़ों व एकल रूप में भी दम्पतियों ने भागीदारी दी। इस शिविर का एकमात्र उद्देश्य पति–पत्नी के रिश्तों में परस्पर प्रेम, त्याग, सहनशीलता, क्षमा, आदर की भावना को जगाकर शांति का जीवन जीकर सच्चे ख्रीस्तीय बनना था। मेरा सच्चा पड़ोसी कौन है ? शायद इसका जवाब हर कोई अलग–अलग अनुभवों द्वारा देगा। परन्तु दाम्पत्य जीवन में पति व पत्नी ही एक दूसरे के सच्चे पड़ोसी हैं और अन्य सदस्य व बच्चे सहायक हाथ हैं। पति–पत्नी का रिश्ता सर्वोपरि है। रिश्ते में पूर्ण समर्पण हो। हृदय का एक भाग ईश्वर व दूसरा भाग पति अथवा पत्नी का हो। पति–पत्नी की मधुरता पूरे परिवार, पड़ोस व कलीसिया को महकाती है। कोशिश करें उस खुशबू को बनाए रखने की। बीच–बीच में ग्रुप वाद–विवाद द्वारा सभा को मनोरंजन भरा बनाया गया जिसके द्वारा हमें एक–दूसरे के जीवन में ख्रीस्त की उपस्थिति का अनुभव हुआ। सभी उपस्थित लोगों ने बहुतायत से लाभार्थी होकर जीवन बिताने के लिए ईश्वर को वचन दिया।

दीप्ति जॉनसन, बाजपुर

शाहजहाँपुर डीनरी में क्रूसवीर शिविर

जून 8 व 9 को शाहजहाँपुर डीनरी में क्रूसवीर बच्चों के लिए दो दिन का शिविर सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। इस शिविर में पिपरिया पल्ली से 12 बच्चे एवं शाहजहाँपुर पल्ली से 8 बच्चों ने भाग लिया।

जून 8 तारीख की सुबह 8.30 बजे सभी बच्चों ने भक्ति के साथ पवित्र बाइबिल, क्रूस और क्रूसवीर का झंडा लेकर भजन गाते हुए जुलूस में गिरजाघर में प्रवेश किया। इस दौरान फा. विवियन, फा. पौल, फा. वाल्टर, फा. साबू, फा. उदय, एफ.सी.सी. धर्मबहनें एवं कुछ युवाओं ने भी इस जुलूस में शामिल होते हुए इसकी शोभा बढ़ाई। गिरजाघर में फा. विवियन ने सभी बच्चों का स्वागत किया तथा प्रार्थना एवं दीप प्रज्जलन के द्वारा शिविर का शुभारम्भ किया।

तत्पश्चात् फा. पौल फलेरा ने क्रूस का महत्व समझाते हुए बच्चों को क्रूसवीर की निशानी के तौर पर सब बच्चों को क्रूस पहनाया। इन दो दिनों के अंतर्गत बच्चों को क्रूसवीर का मतलब समझाया गया, उन्हें पवित्र बाइबिल से जुड़ी बातें एवं विश्वास के बारे में समझाया। फा. वाल्टर ने मिस्सा के समय विशेष रीति से बच्चों को मिस्सा बलिदान का महत्व तथा मिस्सा की तैयारी किस प्रकार की जाती है इस के बारे में अर्थपूर्ण ढंग से समझाया। बच्चों के लिए खेल–कूद का आयोजन किया गया और विजेताओं को पुरस्कार दिया गया। अन्त में फा. वाल्टर के आर्शीवचन द्वारा इस शिविर का समापन हुआ।

चिकन शब्दावली

चिकन का बाप : चिकन कबाब
चिकन की माँ : चिकन खीमा
जब चिकन स्नान करता है तब आपको मिलेगा : चिकन शवरमा
चिकन जब परेशान है : चिकन सूप
चिकन का इंजेक्शन : चिकन टिक्का
चिकन की तारीफ : बटर चिकन
झाडे की ठंड में फंसा चिकन : चिल्ली चिकन

थोड़ी सी हँसी हो जाय

यदि आप अपने चेहरे से झुरिरयाँ, पिंपल, कोई निशान अथवा उम्रदराज होने के चिन्ह मिटाना चाहते हैं तो इसे इस्तेमाल कीजिये..... Adobe Photoshop तुरन्त लाभ मिलेगा!!!

क्रूसवीर शिविर - बैलपड़ाव

31 मई 2015 से 2 जून 2015 तक तीन दिवसीय क्रूसवीर शिविर का आयोजन बैलपड़ाव संत पीटर चर्च में आयोजित किया गया। इसके मुख्य संचालक बाजपुर पल्ली के फा. विवियन रहे। इस शिविर में 105 बच्चों ने भाग लिया। 31 मई शाम 7 बजे बच्चों का जुलूस क्रूसवीर के शस्त्रों–क्रूसवीर ध्वज, पवित्र क्रूस व पवित्र बाइबिल लेकर स्कूल के प्रांगण से निकल कर चर्च तक निकाला गया। दीप प्रज्जलन के बाद बच्चों को आशीषित क्रूस पहनाए गए व साथ ही क्रूसवीर सदस्यता की शपथ दिलाई गयी। इस शिविर में सभी को क्रूसवीर मोनोग्राम में बनी आकृतियों का अर्थ समझाया गया। सभी को येसु के वीर सेनानी बनकर शैतान को हराकर, सच्चा ख्रीस्तीय बनने के लिए प्रेरित किया गया। माता–पिता, बुजुर्गों व धर्मभाई व बहनों का सम्मान करने की शिक्षा दी गयी। बच्चों को परस्पर मिलकर एक साथ कार्य करने की शिक्षा के लिए 6 ग्रुपों में बाँटकर, हर ग्रुप को संतों का नाम दिया। इसके द्वारा कई सामुहिक व एकल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। रात में बच्चों की थकावट मिटाने के लिए नाच–गाने की व्यवस्था थी। अंतिम दिन चर्च में प्रार्थना व मिस्सा के बाद विजेताओं को सम्मानित किया गया। क्रूसवीर गीत गाया गया। शिविर के बीच–बीच में सिखाए जाने वाले एक्शन साँग बच्चों की थकान मिटाकर उनमें नई स्फूर्ति भर कर मुस्कान ला देते थे। दोपहर के भोजन के बाद सभी अपने–अपने गंतव्य को रवाना हो गये।

दीप्ति जॉनसन, बाजपुर

अनुग्रह आश्रम में आगामी कार्यक्रम

1. जुलाई 23 से 26 तक महिलाओं के लिए साधना। सभी महिलाओं से निवेदन है कि वे इस साधना में अवश्य भाग लें।
2. अगस्त 1 से 30 तक बाईबिल प्रशिक्षण होगा। इसमें जो अगुवा या प्रचारक बनना चाहते हैं या बाइबिल ज्ञान पाना चाहते हैं वे भाई बहन अपना नाम पंजीकरण करें। मो. नं. 8171657147
3. अगस्त 10 से 12 तक एक से एक को सुसमाचार आदान प्रदान करने का प्रशिक्षण है। इसमें सभी अगुवा एवं सुसमाचार प्रचार करने वाले और जो सुसमाचार प्रचार करने के इच्छुक लोग भाग लें।
4. अगस्त 27 से 30 तक पुरुषों की साधना। सभी पुरुषों से निवेदन है कि वे इस साधना में अवश्य भाग लें।

आप राष्ट्राध्यक्ष हैं तो क्या.....मेरे सामने आपको झुकना ही पड़ेगा।

अनुग्रह आश्रम में युवतियों की साधना

10 से 14 जून तक आश्रम में युवतियों के लिये आध्यात्मिक साधना का आयोजन किया गया। इस साधना में 150 युवतियों ने भाग लिया। साधना की शुरूआत बाईबिल जुलूस से प्रारम्भ हुई। इसके बाद फा. रूडोल्फ ने प्रभु के वचन की शक्ति पर प्रकाश डालते हुए वचन के बारे में समझाया। साधना में भाग ले रही सभी युवतियों ने बड़ी भक्ति एवं श्रम से प्रार्थना व सेवा की। इन युवतियों को मुक्ति, पाप, पश्चात्ताप्, वचन, दस नियम, व्यक्तिगत प्रार्थना, पारिवारिक प्रार्थना, पवित्रात्मा व साक्षीमय जीवन के बारे में प्रभु के वचनों से शिक्षा दी गई। साधना के मुख्य वक्ता फा. रूडोल्फ, फा. सुनील, भाई लूकस, भाई विनोद, भाई सुनील और बहन पौलीन थे। रविवार को सत्संग के साथ साधना का सफलता पूर्वक समापन हुआ।

युवतियों के अनुभव :

मेरा नाम राधिका है। मेरे पेट मे हमेशा दर्द रहता था और मैं हमेशा बीमार रहती थी। मैं प्रार्थना तो करती थी पर विश्वास की कमी थी। मैंनें इस साधना में भाग लिया और विश्वास के साथ प्रार्थना की और प्रभु ने मुझे चंगा कर दिया। प्रभु को धन्यावाद।

मेरा नाम गीता है। मुझे इस साधना में प्रभु के प्रेम का अनुभव हुआ। मैं इस संसार में खोई हुई थी और ईश्वर से बहुत दूर थी। हमेशा पढ़ाई और महान बनने के बारे में सोचती रहती थी। साधना में येसु ने मुझे स्पर्श किया और मुझे एहसास हुआ कि प्रभु मुझसे प्यार करता है और मैनें जाना कि मेरा रास्ता गलत था। मैंनें यह भी सीखा कि हमें माता–पिता का आदर करना चाहिए और सबसे प्यार करना चाहिए।

मेरा नाम आदेश है। मैंनें इस साधना में सीखा और निर्णय लिया कि मुझे ईश्वर की आज्ञाओं का पालन करना है। अपने पापों पर पश्चात्ताप् करके पवित्र बने रहना है। मैंने यह भी सीखा कि पवित्र आत्मा हमारा सहायक है और हमारे साथ रहता है। हमें हमेशा पवित्रात्मा से भरे रहना है।

मेरा नाम गीता है। मेरी बहन को दौरे पड़ते थे। जिस दिन हम साधना में भाग लेने घर से चले उसे दौरा पड़ गया। किसी तरह मैं उसे आश्रम में ले आई और साधना में भाग लिया। पहले उसे रोज दौरे पड़ते थे। पर साधना में भाग लेकर प्रार्थना करने से वह चंगी हो गई और वह अब स्वस्थ है।

मेरा नाम मोनिका है। इस साधना में प्रभु ने मुझे बहुत अच्छे अनुभव दिये। मैं जब साधना में आई तब न तो मैं अच्छे से बोल पा रही थी और न गा पा रही थी। मैंनें अपने आप को प्रभु को समर्पित किया और प्रार्थना की। उसी समय प्रभु ने कृपा दे दी और अच्छी तरह बोल और गा सकी। प्रभु को धन्यावाद।

अनुग्रह आश्रम में क्रूसवीर बच्चों की साधना

03 से 07 जून तक अनुग्रह आश्रम में कूसवीर बच्चों के लिए साधना का आयोजन किया गया। इस साधना में लगभग 240 बच्चों ने भाग लिया। साधना की शुरूआत बाइबिल जूलुस के साथ प्रारम्भ की गई। साधना के मुख्य प्रवक्ता फा. विवियन और फा. रूडोल्फ थे। बच्चों को प्रभु के वचन की शिक्षा दी गई। साथ ही साथ एक्शन गीतों व अन्य गतिविधियों के द्वारा क्रूसवीर के इन बच्चों को प्रभु के प्रेम का अनुभव दिलाया गया।

बच्चों के अनुभव

मेरा नाम एलिस है। मैंने इस क्रूसवीर शिविर में प्रभु येसु के प्रेम के बारे में सीखा कि कैसे प्रभु के वचनों द्वारा अपना जीवन सुंदर बना सकें। ईश्वर के नियमों के पालन द्वारा हम ईश्वर की आशिष पाते है। हमनें प्रार्थना करना सीखा और दूसरों की मदद करना सीखा।

मेरा नाम अशोक है। मैंने इस क्रूसवीर शिविर में प्रभु के वचन पढना, प्रार्थना करना, प्रभु के प्रेम में बढना और परिवार में प्रार्थना करना भी सीखा।

मेरा नाम जैसिमन जेम्स है। मैंने इस क्रूसवीर शिविर में प्रभु येसु जीवन के बारे में सीखा कि प्रभु का जीवन प्रार्थना का जीवन है। व्यक्तिगत प्रार्थना करना, वचनों को पढना और ईश्वर से बातें करना सीखा ।

मेरा नाम साक्षी है। मैंने इस क्रूसवीर शिविर में बहुत सी अच्छी बातें सीखे हैं। जैसे प्रभु से जुड़ना, परिवारिक प्रार्थना करना आश्रम में आकर प्रभु के वचनों को सुनना, प्रभु से जुड़े रहना।

मेरा नाम मिनाक्षी है। मैंने इस क्रूसवीर शिविर में प्रभु के वचनों द्वारा उसकी ज्योति बनकर दूसरों को प्रकाश देना, लोगों की भलाई करना, प्रभु के बारे में लोगों को बताना जैसी बातें सीखीं।

मेरा नाम नितिन है। मैंने इस क्रूसवीर शिविर में प्रभु की आज्ञाओं को सीखा जैसे माता–पिता का आदर करना, झूठ न बोलना, झूठी गवाही न देना, चोरी न करना और दूसरों के लिए प्रार्थना करना।

मेरा नाम अनुष्का है। मैंने इस क्रूसवीर शिविर में, दूसरों के लिए प्रेरणा बनना और प्रभु की नई सृष्टि बनकर जीवन बिताना, और जो प्रभु को नहीं जानते उन्हें प्रभु के बारे में बताना जैसी अच्छी बातें सीखीं।

साक्ष्य

मेरा नाम आलोक पायस गिल है। मैं ग्राम नौसर पल्ली (खटीमा) का रहने वाला हूँ। मैं रात को गहरी नींद में सोते समय स्वप्न के दौरान अचानक चिल्लाने लगता था, जिससे मेरे आस–पास के लोग एवं मेरे माता–पिता तथा भाई–बहन सभी जाग जाते और मेरी दशा देखकर परेशान होते और मैं भी बहुत परेशान हो जाता था। इतना ही नहीं स्वप्नोपरान्त मैं पुनः सो भी जाता था। जब मैं आश्रम में आया तो मैंने मन्दिर में बैठकर प्रार्थना की तथा फादर जी से प्रार्थना करने के लिए कहा। मैंने प्रभु येसु से प्रार्थना की कि मैं तेरे पास आया हूँ और मुझे यहाँ रात के समय कोई परेशानी न हो, नहीं तो मेरी वजह से अन्य लोगों को परेशानी होगी। प्रभु येसु ने मेरी पुकार सुन ली और मैं रात में आराम से सो सका।

प्रातःकाल उठते ही मेरे मन में एक सवाल आया, आज मैं सुबह उठा हूँ लेकिन क्यों? और मैंने ईश्वर को धन्यवाद दिया। वह ईश्वर जो सदैव मेरे सुख–दुःख में साथ रहता है। अब मैं स्वस्थ हूँ और प्रभु येसु को धन्यवाद देता हूँ। आल्लेलूइया।

साक्ष्य

जय येसु की, मेरा नाम आदेश मौर्य है। मैं जिला पीलीभीत ब्लाक ललौरी खेड़ा ग्राम कल्यानपुर खास की रहने वाली हूँ। मुझे 15 सालों से अनेक प्रकार की दुष्ट आत्माओं ने घेर रखा था। मेरे पिता जी ने मुझे ठीक करने के लिये लगभग 5–6 लाख रुपये खर्च कर दिये। मेरे पिता ने मुझे पीलीभीत के सभी डाक्टरों को दिखाया। अनेक तान्त्रिक लोगों को दिखाया। लेकिन मैं ठीक नहीं हुई। जब मेरे पिता को किसी ने प्रभु येसु के बारे में बताया मेरे परिवार में सबने विश्वास किया और मैं प्रभु के पास गई। मुझे प्रभु ने आठ दिनों में चंगाई प्रदान किया और तुरन्त मैं ठीक हो गई। मेरे प्रभु येसु को धन्यवाद।

थोड़ी सी हँसी हो जाय

जब मैं छोटा था, मुझे अंधेरे से डर लगता था। अब जब मुझे बिजली का बिल मिलता है, उजाले से डर लगता है।

अनुभव

मेरा नाम जगत एन्जलो है। अनुग्रह आश्रम में आने से पहले मेरा जीवन काफी अन्धकारमय था। धर्मप्रचारक प्रशिक्षण के दौरान मैंने जो सीखा उससे मुझे ये अनुभव हुआ कि हर परिस्थिति में हमें प्रभु को याद रखना चाहिए क्योंकि वचन में लिखा है "मैं पिता से प्रार्थना करूँगा और वह तुम्हें एक सहायक प्रदान करेगा जो सदा तुम्हारे साथ रहेगा।" लिखा है "आप अपनी सारी चिंताए ईश्वर पर छोड़ दें क्योंकि वह तुम्हारी सुधि लेता है। इन दो पंक्तियों ने मुझे अत्यधिक प्रभावित किया जब ईश्वर हमारे साथ है और वह हमारी सुधि लेता है तो हमें अपने मार्ग से विचलित नहीं होना चाहिए। प्रभु येसु की स्तुति हो। प्रभु येसु को धन्यवाद।

अनुभव

मेरा नाम कैलाशो है। मैं पन्तनगर की निवासी हूँ। प्रभु ने मेरी बहू के जीवन में महान कार्य किये। मेरी बहू की डेलीवरी नहीं हो पा रही थी। जिस दाई को हमने बुलाया था उसने भी मना कर दिया और कहा कि आप इसे और कहीं ले जाओ, मेरे बस की बात नहीं है। हम सब बहुत निराश हो गये। फिर मैंनें अपनी बहु के पेट पर हाथ रखकर प्रभु येसु से प्रार्थना की। बच्चा पैदा हो गया पर वह मरा हुआ था। मैंनें फिर सारे दिल से प्रभु को पुकारा और प्रार्थना की। प्रभु ने हम पर दया की और थोड़ी देर बाद बच्चा रोने लगा। अब वह बच्चा एक महीने का है और स्वस्थ है। प्रभु की सारी आशिषों के लिए हम उसे सारे दिल से धन्यवाद देते हैं।

धर्मप्रांत में नये धर्मसंघ का आगमन

बैगलूरू स्थित मिशनरीस ऑफ सेक्रेड हार्ट (MSC) धर्मसंघ उत्तर भारत में अपना सेवाकार्य प्रारंभ करने का इच्छुक है। यह धर्मसंघ दुनिया के 56 देशों में कार्यरत है। भारत में यह धर्मसंघ विगत 28 वर्षों से सेवाकार्य कर रहा है। प्रस्तुत अपना प्रशिक्षण पूरा कर चुके तीन धर्मभाई धर्मप्रांत में कार्य करेंगे। उनके साथ फादर डेविड MSC जो पापुआ न्यूगिनिया में 15 वर्ष और झाबुआ धर्मप्रांत में दो वर्ष कार्य कर चुके हैं, भी रहेंगे। फादर डेविड रूद्रपुर में रहेंगे और तीन धर्मभाई अलग–अलग पल्लियों में सेवा कार्य करेंगे। जून अंत तक वे बरेली पहुँचेंगे। धर्मप्रांत की ओर से चेतना आप चारों का हार्दिक स्वागत करता है।

नये विद्यालयों की आधारशिला

धर्मप्रांत के दो मिशन केन्द्र, बण्डा और अमरिया में नये विद्यालयों की स्थापना की आधारशिला रखी गयी। 19 मई को बण्डा में सैंट जॉन भवन की आधारशिला धर्माध्यक्ष इग्नेशियस डिसूजा द्वारा शाहजहाँपुर डीनरी के पुरोहितों, ध र्मसंघियों तथा लोकधर्मियों की उपस्थिति में रखी गई। फा. चिन्नप्पन भवन निर्माण की देखरेख करेंगे।

5 जून को अमरिया में सैंट मेरीस विद्यालय भवन का शिलान्यास कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आशादीप केन्द्र के प्रांगण में सम्पन्न इस विधि में पोलीगंज डीनरी के पुरोहित, धर्मबहनें, लोकधर्मी तथा स्थानीय लोग उपस्थित रहे। फा. चार्ल्स फलेरा भवन निर्माण की निगरानी करेंगे। उम्मीद है कि अगले वर्ष दोनों विद्यालय विधिवत् शिक्षण कार्य आरंभ करेंगे।

मौंट सेन्ट मैरिज विद्यालय का शुभारम्भ-रूद्रपुर

2 जून 2015 को रूद्रपुर में C.J. धर्मसंघ द्वारा संचालित मौंट सेन्ट मैरिज विद्यालय का विधिवत् शुभारम्भ हुआ। धर्माध्यक्ष मान्यवर इग्नेशियस डिसूजा ने नये भवन को आशिष दी। इस अवसर पर निवर्तमान धर्माध्यक्ष मान्यवर एन्थोनी फर्नांडिस, काठगोदाम डीनरी के पुरोहित एवं धर्मसंघी, उत्तराखण्ड अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष श्री थॉमस एवं शहर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। C.J. धर्मसंघ की प्रोविन्सियल, इलाहाबाद प्रोविन्स के प्रतिनिधि धर्मबहनें एवं दिल्ली प्रोविन्स की अनेक धर्मबहनें इस अवसर पर उपस्थित थीं। C.J. धर्मसंघ बरेली धर्मप्रांत में ज्योलिकोट और नैनीताल में विद्यालय संचालित करती हैं। पूरनपुर में वे धर्मप्रान्तीय विद्यालय में कार्यरत हैं। प्रस्तुत सत्र में कक्षा Nursery से कक्षा 3 तक एवं कक्षा 6–7 की कक्षायें संचालित की जायेंगी।

फा. रोमन डॉयस, रूद्रपुर

हार्दिक स्वागत
फा. डेविड MSC

महा क्विज़..... बम्पर पुरस्कार

बाइबिल पाठकों के लिये खुशखबरी,

आगरा और उत्तर क्षेत्रीय बाइबिल कमीशन ''लोगोस बाइबिल क्विज़–हिन्दी'' का आयोजन कर रहा है। अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर इस अनोखे अवसर का लाभ उठायें।

1. प्रतियोगिता धर्मप्रांतीय और राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होगी। धर्मप्रांतीय स्तर पर सितंबर 27 को अपरान्ह 2 से 3.30 बजे तक होगी। परीक्षा केन्द्रों की सूची आगामी अंक में दी जायेगी। राष्ट्रीय स्तर पर प्रतियोगिता दिल्ली में 29 नवंबर को आयोजित की जायेगी।
2. बाइबिल क्विज़ के लिये विषय : **गणना ग्रंथ 1–10 अध्याय; सूक्ति ग्रंथ 1–9 अध्याय; योहन अध्याय 1–12; यूदस का पत्र** प्रश्न वस्तुनिष्ठ (ओब्जेक्टिव) प्रकार के होंगे।
3. प्रतिभागियों के लिये आयु के अनुसार A, B, C, D, E, F प्रकार से छः वर्ग होंगे।
   - **वर्ग A :** जिनका जन्म 1 जनवरी 2004 के बाद हुआ हो।
   - **वर्ग B :** जिनका जन्म 1 जनवरी 1999 से 31 दिसम्बर 2003 के बीच हुआ हो।
   - **वर्ग C :** जिनका जन्म 1 जनवरी 1984 से 31 दिसम्बर 1998 के बीच हुआ हो।
   - **वर्ग D :** जिनका जन्म 1 जनवरी 1964 से 31 दिसम्बर1983 के बीच हुआ हो।
   - **वर्ग E :** जिनका जन्म 1 जनवरी 1951 से 31 दिसम्बर 1963 के बीच हुआ हो।
   - **वर्ग F :** जिनका जन्म 31 दिसम्बर 1950 से पहले हुआ हो।
4. धर्मप्रांतीय और राष्ट्रीय स्तर पर प्रत्येक वर्ग में तीन पुरस्कार होंगे।

   धर्मप्रांतीय स्तर पर :
   - प्रथम पुरस्कार : 10,000 रुपये
   - द्वितीय पुरस्कार : 8,000 रुपये
   - तृतीय पुरस्कार : 7,000 रुपये

   यह धनराशि शिक्षण सहायता के लिये दी जायेगी।

   राष्ट्रीय स्तर पर :
   - प्रथम पुरस्कार : 10,000 रुपये
   - द्वितीय पुरस्कार : 2500 रुपये
   - तृतीय पुरस्कार : 1000 रुपये
5. धर्मप्रांतीय स्तर पर प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर आने वाले प्रतिभागी राष्ट्रीय स्तर पर भाग ले सकेंगे। राष्ट्रीय स्तर पर भाग लेने के लिये न्यूनतम 80% अंक प्राप्त करना अनिवार्य हैं।
6. भाग लेने के इच्छुक प्रतिभागी अपना नाम पल्ली पुरोहित के पास रु. 10/– के साथ रजिस्ट्रेशन करवा लें। पल्ली पुरोहित 5 अगस्त तक प्रतिभागियों का नाम, पल्ली तथा रु. 10/– रजिस्ट्रेशन शुल्क के साथ फा. अरुण सल्दान्हा के पास जमा करें।

   रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ : 1 जून 2015 **रजिस्ट्रेशन समाप्त :** 31 जुलाई 2015
7. बाइबिल अध्ययन के लिये फा. कामिल बुल्के का अनुवाद प्रयोग करें।
8. किसी भी पल्ली में 25 से अधिक प्रतिभागी हो, वहाँ परीक्षा केन्द्र हो सकता है। यदि 25 से कम प्रतिभागी हों तो आस–पास के केन्द्र में जाकर परीक्षा दे सकते हैं। प्रत्येक परीक्षा केन्द्र में निगरानी के लिये केन्द्र प्रभारी, एक धर्मबहन और एक लोकधर्मी होना अनिवार्य है।
9. परीक्षा समाप्त होने के पश्चात् सभी उत्तर पुस्तिकाओं को फा. अरुण सल्दान्हा के पास भेजें।
10. अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें :–

    फा. अरुण सल्दान्हा : 8005087709 **फा. ग्रेगरी फ्रैंक :** 9411699354

बाइबिल प्रश्नोत्तरी -12

(राजाओं का पहला ग्रन्थ अध्याय 12 से 22 तक)

प्रिय पाठकों, पुरोहितों के अलावा सभी इस क्विज में भाग ले सकते हैं। उत्तर पुस्तिका पर कृपया अपना नाम, पिता का नाम, पल्ली या संस्था का नाम और मोबाइल संख्या अवश्य लिखें। बाइबिल प्रश्नोत्तरी के लिए कामिल बुल्के की हिन्दी बाइबिल का ही संदर्भ लें। प्रथम Rs. 500, द्वितीय Rs. 300 तथा तृतीय Rs. 200 के नकद पुरस्कार से पुरस्कृत किया जायेगा। यदि किसी पुरस्कार के लिए एक से अधिक विजेता पाए जाते हैं तो उनका निर्णय लॉट द्वारा किया जायेगा। आपके उत्तर हमें जुलाई 25, 2015 से पहले अवश्य मिल जाने चाहिए। कृपया केवल अपने उत्तर निम्न पते पर भेजें–**Rev. Fr. Arun Saldanah,** Bishop's House 63, Cantt. Bareilly 243 001 (U.P). E-mail: chetnabareilly1989@gmail.com

1. क्या हुआ पहले दो नायकों और उनके सैनिकों को जो एलियाह को लाने गये? What happened to the first two groups of fifty that were sent to get Elijah?
2. एलीशा ने एलियाह से क्या वर माँगा? What did Elisha request of Elijah?
3. एलीशा को चिढ़ाने वाले लड़कों को क्या हुआ? What happened to the children who mocked Elisha?
4. एलीशा ने किसको जिलाया? Whom did Elisha raised from death?
5. ''अगले वर्ष, इसी समय तुम्हारी गोद में पुत्र होगा'' किसने किससे कहा? "At this season in due time, you shall embrace a son," who said to whom?
6. मेरा हाथ उस लड़के के चेहरे पर रख दोगे। गलत शब्द को सही लिखें। Lay my hand on the face of the child. Correct the wrong word.
7. एलीशा का पहला चमत्कार क्या है? Which is the first miracle of Elisha?
8. एलीशा ने पानी के स्रोत में जाकर ———— डाला। Elisha went to the spring of water and threw the_____into it.
9. कोढ़ी नामान को एलीशा ने क्या करने को कहा? What did Elisha commanded to Naaman to do?
10. एलीशा की अनुमति के बिना नामान से उपहार लेने का क्या दंड गेहजी को मिला? What happened to Gehazi by accepting the offerings from Naaman?
11. विषैले खाद्य को स्वादिष्ट होने के लिए एलीशा ने क्या किया? What di do Elisha to purify the pot of stew?
12. ——— ने इस्राएल पर छापा मारना छोड़ दिया। _____ no longer came raiding into the land of Israel.
13. चार कोढ़ियों ने क्या करने को सोचा? What did the four men with leprosy decide to do?
14. ———— ने चादर ली और उसे पानी में डुबा कर राजा के सिर पर रखा। _____took the bed cover and dipped it in water and spread it over the king's face.
15. किसने प्रतिज्ञा की थी कि दाऊद और उसके वंशजों के लिए एक दीपक जलाये रखेगा? Who promised to give a lamp to David and to his descendants forever?
16. किसने योरोहम के विरुद्ध षड्यन्त्र रचा? Who conspired against Joram?
17. जब योहोराम यूदा का राजा बना तब उसकी उम्र क्या थी? What was the age of Joram when he became the king of Judah?
18. समारिया में ———— के सत्तर पुत्र थे। _____had seventy sons in Samaria.
19. ————लोगों का जयकार सुन कर प्रभु के मन्दिर में लोगों के पास आयी। _____heard the noise of the guard and of the people,and went into the house of the Lord to the people.
20. योआश की माता का नाम क्या है? Who is the mother of Jehoash?

मेरा विश्वास (धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी) - 13

प्रिय पाठकों, पुरोहितों के अलावा सभी इस क्विज में भाग ले सकते हैं। उत्तर पुस्तिका पर कृपया अपना नाम, पिता का नाम, पल्ली या संस्था का नाम और मोबाइल संख्या अवश्य लिखें। धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी के लिए **"मैं विश्वास करता हूँ –संक्षिप्त काथलिक धर्मप्रश्नोत्तरी"** पुस्तक का ही संदर्भ लें। प्रथम Rs. 500, द्वितीय Rs. 300 तथा तृतीय Rs. 200 के नकद पुरस्कार से पुरस्कृत किया जायेगा। यदि किसी पुरस्कार के लिए एक से अधिक विजेता पाए जाते हैं तो उनका निर्णय लॉट द्वारा किया जायेगा। आपके उत्तर हमें जुलाई 25, 2015 से पहले अवश्य मिल जाने चाहिए। कृपया केवल अपने उत्तर निम्न पते पर भजें – **Rev. Fr. Arun Saldanha,** Bishop's House 63, Cantt. Bareilly - 243 001 (U.P). E-mail: chetnabareilly1989@gmail.com

1. ———— धर्मविधि सभी प्रार्थनाओं में सबसे महान प्रार्थना है।
2. येसु देर तक प्रार्थना करने के लिए अक्सर कहाँ जाते थे?
3. हमारे एकमात्र मध्यस्थ कौन हैं?
4. ———— हमें येसु के साथ घनिष्ठ संबन्ध की ओर ले जाता है। *(चेतना अंक : 06 देखें)*
5. ———— ईश्वर का महिमागान करते हैं और हमारे साथ मिलकर उससे निवेदन करते हैं।
6. जब हम ———— शब्द उच्चरित करते हैं तो हम गाब्रिएल दूत के शब्दों को दुहराते हैं।
7. ———— महासभा बतलाती है कि सम्पूर्ण जनता ईश्वर की माता और मनुष्यों की माता के समक्ष अपनी अत्यावश्यक प्रार्थना लाकर रखती है।
8. मेरे लिए प्रार्थना हृदय को ईश्वर की ओर ऊपर उठाना है। यह किसने कहा?
9. ———— मसीही जीवन का स्रोत और चरम बिन्दु है।
10. ———— में हमें ईश्वर और मनुष्य के बीच में सतत् वार्तालाप देखने को मिलता है।
11. यूखरिस्त में मसीही जनता ———— के साथ मिलकर ईश्वर को धन्यवाद देते हैं।
12. ———— के प्रति हमारी भक्ति कैथोलिक विरासत का अनिवार्य अंग है। *(चेतना अंक:06 देखें)*
13. येसु के पवित्र हृदय का संदेश यही है –हमारे प्रति ———— प्रेम। *(चेतना अंक:06 देखें)*
14. पिछले महीने में प्रभु येसु के पवित्र हृदय का समारोह कब मनाया गया?
15. ख्रीस्त के पवित्रतम शरीर और रक्त का महोत्सव कब मनाया जाता है?
16. संतों की महारानी और कलीसिया की माता कौन है?
17. हमारे प्रभु येसु ख्रीस्त का प्रेम–ईश्वर का सहचर्य –तथा पवित्र आत्मा की कृपा –आप सब को प्राप्त हो। यह वाक्य सही या गलत। गलत है तो सही कीजिये।
18. संत योहन बपतिस्ता का जन्मोत्सव कब मनाया जाता है?
19. मौखिक प्रार्थना दो घनिष्ठ मित्रों के बीच का आपसी सहभाजन या वार्तालाप है। किसने कहा?
20. ———— के अनुसार प्रार्थना, असीम दयालु पिता ईश्वर के साथ, उसके इकलौते पुत्र ईसा मसीह के साथ और पवित्र आत्मा के साथ, ईश्वर की संतान का, एक जीवन्त संबंध है।

पालांगंज

अमर उजाला

स्कूल चलो अभियान के तहत निकाली रैली

महिलाओं ने निकाली जागरूकता रैली

बेटी बचाने संबंधी

को समान दर्जा देने संबंधी नारे लगाए

खटीमा मोहम्मदपुर भुड़िया गांव में शराब विरोधी मुहिम चलाती महिलाएं। जागरण

अमर उजाला

बरेली | 24 अगस्त 2014

मनरेगा

हिन्दुस्तान • बरेली • गुरुवार • 26 फरवरी 2015 •

सेवा समिति ने किया महिलाओं

सुचेतना सेवा समिति के बैनर तले एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ब्लाक प्रमुख

बंडा | हिन्दुस्तान संवाद

पीलीभीत

विकलांग बच्चों को पुरस्कृत किया गया

शराब बंदी के लिए सड़क पर उतरीं महिलाएं

जागरण संवाददाता, खटीमा : मोहम्मदपुर भुड़िया गांव में अवैध शराब की बिक्री को लेकर महिलाएं भड़क उठीं। उन्होंने गांव में जनजागरण अभियान चलाया। साथ ही दर्जनों लीटर कच्ची शराब नष्ट कर दी। शनिवार को गांव की महिलाएं एकत्र होकर निकालकर लोगों को इसके प्रति सचेत किया।

इतना ही नहीं महिलाओं ने कच्ची शराब बेचने वालों के ठिकानों से शराब बरामद कर उसे नष्ट कर दिया। साथ ही चेतावनी दी कि यदि उन्हें बेचते पाया गया

कन्या भ्रू

बरेली • गुरुवार • 15 जनवरी 2015 • हिन्दुस्तान

सुचेतना ने आयोजित की खेल प्रतियोगिता

बंडा। सुचेतना समाज सेवा संस्था ने गांव भौरखेड़ा में खेल प्रतियोगिता का आयोजन किया। ठंड की छुट्टियों में स्कूली बच्चों को सक्रिय बनाये रखने के उद्देश्य से संस्था ने गांव स्तर पर बच्चों को विभिन्न प्रकार के खेल ... तथा स्वास्थ्य प्रबंधन में खेलों के महत्व पर प्रकाश डाला। ... लीटर अलका, हरिओम, अजयपाल, सोनी, नेहा का सहयोग रहा।

आदि स्थानों पर जन जागृति अभियान चलाया। इस दौरान कन्या भ्रूण हत्या

चौहान, पूजा चौहान, नीतू चौहान, रीता, राखी, रुबी मलिक, आदि थीं।

व्यक्ति विशेष का भी होता है पतन

समाज सेवा संस्था के तत्वावधान में ग्रामीण ... अभियान चलाकर लोगों को नशे से दूर ...

स्वतंत्र भारत 4

स्कूल चलो रैली निकाली

Suchetna

Fonseca Estate, Kathgodam
Nainital (Uttrakhand)
email : bdsuchetna@gmail.com
website : www.suchenta.org
phone : 05946-266753